शिक्षा में नवाचार–भाग 1
1–शिक्षा में प्रश्न सूचक शब्दों का महत्व

प्रत्येक शिक्षक अपने सेवाकाल में कुछ न कुछ प्रशिक्षण अवश्य प्राप्त करता हैं। यह प्रशिक्षण विशयों के अतिरिक्त, शाला प्रबंधन व जन समुदाय की सहभागिता पर आधारित रही है। प्रशिक्षण चाहे जिस रूप में दिया गया हो, सबका एक सर्वमान्य लक्ष्य यह रहा है कि शालेय शिक्षा व्यवस्था गुणवत्ता युक्त बने व इसका प्रत्यक्ष प्रभाव अध्ययनरत् बच्चों में प्रतिबिम्बित हो।

शालेय शिक्षा व्यवस्था में गुणात्मक परिवर्तन हेतु प्रत्येक प्रशिक्षण में ''**नवाचार**'' के सम्बंध में बात की जाती है। यह नवाचार पाठयक्रमों मे गुणात्मक परिवर्तन/सुधार से लेकर शिक्षण पद्धति एवं शाला प्रबंधन तथा जनसमुदाय की शाला में सहभागिता के तरीकों से सम्बधित हो सकता है। समय–समय पर शिक्षा जगत से जुड़े सभी संस्थान (एन.सी.ई.आर.टी. व एस.सी.ई.आर.टी), पदाधिकारी व शिक्षकों ने इसमें अपना अमूल्य योगदान दिया है। विभिन्न स्तरो पर किए गए नवाचार का ही यह परिणाम है कि आज हमें पाठयक्रमों के प्रस्तुतीकरण, शिक्षण पद्धति व शालेय कार्यो में जनसमुदाय की सहभागिता प्राप्त करने के अनेक नवीन तरीके देखने को मिल रहे है। शिक्षक भी इन सभी नवाचारों का उपयोग बच्चों को गुणवत्तायुक्त शिक्षा देने में कर रहे है। इसके बावजूद भी ऐसे कई कार्य हैं। जिस पर अमल कर हम बच्चों की शैक्षिक स्तर में गुणात्मक परिवर्तन/सुधार कर सकते है। हमारे द्वारा किये जाने वाले यह कार्य जहॉ एक ओर बच्चों की विभिन्न शालेय गतिविधियों में रूचि को बढ़ायेगी वही दूसरी ओर हमारा यह कार्य ''**नवाचार**'' के रूप में बच्चों के शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने मे **मिल का पत्थर** सिद्ध होगा। अब हम कुछ ऐसे ही बिन्दु पर चर्चा करेगें, जिनका अनुशरण कर हम अपने शाला में अध्ययनरत् बच्चों की शैक्षिक स्तर को बढ़ा सकते है।

जब हम पढ़ते थे, शिक्षक कक्षा में आकर निर्धारित पाठय–वस्तु पढ़ाते समय, पाठय वस्तु की समझ परखने के लिए छात्रो से कुछ प्रश्न करते थे। छात्रों द्वारा प्रश्नों के उत्तर दिए जाने अथवा नही दिए जाने पर शिक्षक पाठय–वस्तु को एक बार पुनः समझाने का प्रयास कर आगे बढ़ जाता था। किन्तु शिक्षक द्वारा इस बात पर कभी जोर नही दिया जाता था कि कुछ प्रश्न सम्बधित पाठय–वस्तु पर छात्र भी उनसें करे। यह स्थिति आज भी बनी हुई है। यह तथ्य एक ओर जहॉ यह इंगित करता है कि शिक्षक के पढ़ाने के तरीके छात्रों मे जिज्ञासा उत्पन्न करने में असफल रही है, वही दूसरी ओर यह भी बतलाता है कि शिक्षक ने छात्रो को प्रश्न करना नही सिखलाया हैं। छात्रो द्वारा कक्षा मे शिक्षक से प्रश्न नही करने के कुछ स्पश्ट कारण हैं :–

1. पाठ्य वस्तु प्रस्तुतीकरण में जिज्ञासा/रूचि का अभाव।
2. कहॉ ओर कब कैसे प्रश्न किया जाना है, की जानकारी न होना।
3. छात्रों के प्रश्न पूछने पर शिक्षक द्वारा हतोत्साहित किया जाना।
4. छात्रों में आंतरिक हिचकिचाहट का होना।
5. प्रश्न पूछने की स्वतंत्रता न होना।

जिज्ञासा से मन में प्रश्न की उत्पत्ति होती है और समाधान होने पर अगली जिज्ञासा का जन्म होता है, जो पुनः प्रश्न उत्पन्न होने का कारण बनता है। इस प्रकार इस चक्र से तर्क व ज्ञान का विस्तार होते रहता है। अतः हमें बच्चों के आरंभिक शाला प्रवेश के साथ ही उनमें प्रश्न करने की क्षमता विकास हेतु सुनियोजित रूप से कार्य करना होगा। इसके लिए हम कर सकते हैं :–

1. पाठ्य वस्तु का प्रस्तुतीकरण ऐसा करें जिससे बच्चों में जिज्ञासा उत्पन्न हो।
2. शिक्षण में छात्रों की अधिकतम भागीदारी प्राप्त करने का प्रयास करें। इससे उनमें जिज्ञासा उत्पन्न होगी और वे प्रश्न करना सीखेगें।
3. शिक्षक द्वारा अपने पाठ प्रस्तुतीकरण के दौरान हर प्रकार के प्रश्न जैसे क्या, कौन, कहॉ, कब, कैसे, क्यों इत्यादि पर आधारित प्रश्न किया जाना चाहिए। इससे बच्चें भी प्रश्न करना सीखेगें।
4. बच्चों को प्रश्न पूछने से कभी भी टोकें व रोकें नही।
5. अपने विशय के लिए आबंटित समय–सारिणी में से 10 मिनट **''छात्रों के प्रश्न काल''** के नाम से आरक्षित रखें।
6. प्रत्येक कक्षा के भीतर एक **''प्रश्न पेटी''** रखें। ऐसे छात्र जो प्रश्न पूछने में हिचकिचाहट महसूस करें, शिक्षक ऐसे बच्चों से कहे कि वे अपने मन में उत्पन्न प्रश्न को लिखकर प्रश्न पेटी पर डाल दें।
7. शिक्षक प्रतिदिन कक्षा के आरम्भ में इस प्रश्न पेटी को खोलकर प्रश्नों का जवाब छात्रों को बतलाएगा।
8. प्रश्न पेटी बनाने हेतु पुठ्ठे/गत्ते का उपयोग करें।

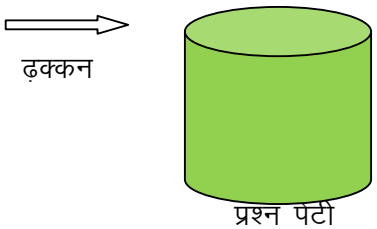

इससे लाभ :–

1. बच्चों में प्रश्न पूछने के सम्बंध में हिचक दूर होगी।
2. बच्चों के प्रश्नों के समाधान होने पर और जिज्ञासा उत्पन्न होगी।
3. छात्रो का ध्यान पाठ प्रस्तुतीकरण पर केन्द्रित रहेगा।
4. स्वतंत्र विचार शक्ति का विकास होगा।

रघुवंश मिश्रा
बी.आर.पी. कोटा

क्रमशः

शिक्षा में नवाचार–भाग 2
2–प्रश्न सूचक शब्द और प्रयोग

जिज्ञासा से प्रश्न उत्पन्न होती है और मन में उत्पन्न जिज्ञासाओं का एक निश्चित क्रम होता है। मन की इस जिज्ञासा को शान्त करने के लिए प्रश्न किया जाता हैं और प्रश्नों के लिए कुछ निश्चित शब्द निर्धारित है, जिन्हे ''प्रश्न सूचक शब्द'' कहा जाता हैं। मन में उत्पन्न जिज्ञासाओं के क्रम के आधार पर इन प्रश्न सूचक शब्दों को भी एक निश्तिचत कम दिया जा सकता है– जैसे– कोई भी मनुश्य जब किसी नए वस्तु अथवा जीवों के सम्पर्क में आता हैं तो सबसे पहले उसके मन में जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि यह वस्तु/जीव क्या/कौन हैं ? इसका समाधान हो जाने पर उसके मन में यह जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि यह वस्तु/जीव कहॉ/कब से आया और इसका अस्तित्व किससे सम्बंधित है ? इसका समाधान होने पर ही मन में फिर जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि इस वस्तु/जीव की संख्या/मात्रा कितनी हैं तथा यह कैसे और क्यों अस्तित्व में आया ? इस प्रकार हम पाते है कि जिज्ञासाओं के एक निश्चित कम मे ही मन में प्रश्न उत्पन्न होता है और जिज्ञासाओं के कम के आधार पर अलग–अलग प्रश्न सूचक शब्द हैं। इसे हम सारिणी के द्वारा संक्षेप मे समझ सकते हैं–

क्र.	जिज्ञासा का क्रम	प्रयुक्त प्रश्न सूचक शब्द	जिज्ञासा/उद्देश्य की पूर्ति
1	प्रथम स्तर	क्या/कौन	वस्तु/जीव की पहचान
2	द्वितीय स्तर	कहॉ/कब	स्थान/समय/अवधि की जानकारी
3	तृतीय स्तर	किससे/किसका	प्रभावित होने वाले/अधिकार/स्वामित्व
4	चतुर्थ स्तर	कितना	संख्या/मात्रा/दूरी
5	पंचम स्तर	कैसें	साधन/तरीका/विधि/ढ़ंग
6	शश्ठम स्तर	क्यों	कार्य–कारण

इन प्रश्न सूचक शब्दों को जिज्ञासाओं/उद्देश्य की पूर्ति के प्रकार के आधार पर दो भागों में विभाजित किया जा सकता है–

1. **सूचना–परक प्रश्न सूचक शब्द**–क्या, कौन, कहॉ, कब, किसका व कितना ऐसे प्रश्न सूचक शब्द है, जिनसे मन में उत्पन्न सूचना परक जिज्ञासाओं की पूर्ति होती है।
2. **तर्क परक प्रश्न सूचक शब्द**–कैसे और क्यों ऐसे प्रश्न सूचक शब्द हैं, जिनसे मन में उत्पन्न तर्क परक जिज्ञासाओं की पूर्ति होती हैं।

इन महत्वपूर्ण प्रश्न सूचक शब्दों के द्वारा होने वाले जिज्ञासा पूर्ति को भलि–भॉति समझने के बाद यह स्पश्ट हो जाता है कि शिक्षक द्वारा छात्रों से प्रश्न करते समय प्रश्न करने के उद्देश्य व इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु किये जाने वाले प्रश्न से सम्बंधित शब्दों का प्रयोग निर्धारित कम में ही किया जाना चाहिए अर्थात शिक्षक द्वारा किसी पाठ्य वस्तु को पढ़ाया जाने के बाद सीधा कैसे और क्यों से सम्बंधित प्रश्न छात्रों से नही किया जाना चाहिए। छात्रों द्वारा इन प्रश्नों का जवाब नही दिया जाना, पाठ्य वस्तु के सम्बंध में उनकी अनभिज्ञता अथवा नासमझी को प्रदर्शित नही करता, बल्कि जवाब का न दिया जाना उनके मन में जिज्ञासा उत्पत्ति के स्वभाविक कम में होने वाले रूकावट/अवरोध को प्रकट करता है। जैसे– शिक्षक ने कक्षा पांचवी में पर्यावरण विशय के अंतर्गत ''सौर ऊर्जा'' पाठ का अध्यापन कराया। पाठ पढ़ाने के बाद शिक्षक द्वारा छात्रो से पूछे जाने वाले प्रश्न का कम इस प्रकार होना चाहिए–

1. सौर ऊर्जा क्या हैं ?
2. सौर ऊर्जा कहॉ से प्राप्त होती हैं ?
3. सौर ऊर्जा हम तक कैसे पहुॅचती हैं ?
4. सौर ऊर्जा क्यों महत्वपूर्ण हैं ?

उपरोक्त निश्चित कम में प्रश्न पूछने से छात्रों के मन में निर्धारित जिज्ञासा स्तर की उत्पत्ति होती है और छात्र पूछे गए प्रश्नों के उत्तर सरलता से देने लगते है।

इसे जानना क्यों आवश्यक हैं –

1. बच्चों के द्वारा किसी अवधारणा को समझने की मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया को समझ सकें।
2. कक्षा अध्यापन के दौरान छात्रों की सहभागिता प्राप्त न होने की स्थिति में, शिक्षक के मन में उत्पन्न निराशा से बच सके।
3. बच्चों के कक्षा व स्तर के अनुरूप प्रश्न कर सकें।
4. पाठ्य वस्तु के सही उद्देश्य को जान सकें।
5. कक्षावार, विशयवार प्रश्न निर्धारित कर सकें।

रघुवंश मिश्रा
बी.आर.पी. कोटा

क्रमशः

शिक्षा में नवाचार पार्ट – 3
प्रश्न सूचक शब्द और गतिविधि

बच्चे कक्षा में सरलता व निर्भयता से प्रश्न कर सके, इसके लिये कुछ सरल और रोचक गतिविधियॉ किया जाना चाहिए –

1.क्या और कौन और पर आधारित गतिविधि

उद्देश्य –बच्चे क्या और कौन प्रश्न सूचक शब्द का प्रयोग कर प्रश्न करना सिख जाये ।

गतिविधि के चरण –:

1. शिक्षक बहुत सी वस्तुओं व जीवो के चित्र बच्चो को दिखायें ।
2. बच्चो को दिखाये जाने वाले वस्तुओं/जीवों के चित्र में कुछ वस्तु/जीव ऐसा हो, जिसके सबंध में बच्चे पहले से न जानते हो।
3. शिक्षक पहले ऐसे वस्तु/जीव के चित्र, जिसे बच्चे पहले से जानते हो,के संबंध मे क्या/कौन प्रश्न सूचक शब्द का प्रयोग कर पूछे। जैसे– आम का चित्र दिखाकर पूछे कि यह क्या है ? इसी प्रकार महात्मा गांधी का चित्र दिखाकर पूछे कि यह कौन है?
4. परिचित वस्तु/जीवो पर क्या और कौना प्रश्न सूचक शब्दों के पर्याप्त अभ्यास के बाद अपरिचित वस्तु/जीवो के संबंध में जानने के लिये बच्चो से कहे कि वे क्या और कौन प्रश्न सूचक शब्द का प्रयोग कर प्रश्न पूछें।
5. बच्चो के द्वारा सरल प्र न करना सीख लेने के बाद उन्हें यह भी बतलाये कि जब हम एक से अधिक वस्तु/जीव के संबंध में एक साथ जानना चाहें तो क्या के स्थान पर किन–किन/क्या–क्या और कौन के स्थान पर किस–किस प्रश्न सूचक शब्द का प्रयोग कर प्र न पूछतें है ।
6. मूर्त वस्तु/जीव के संबंध में क्या और कौन प्रश्न सूचक शब्द के प्रयोग कर प्रश्न करना सीख लेने के बाद बच्चो को यह भी बतलायें कि इन प्रश्न सूचक शब्दो का प्रयोग अमूर्त वस्तु/घटना का वर्णन व जीवों के आन्तरिक संरचना सं संबधित कार्यो के विवरण जानने के लिये भी किया जाता है। जैसे – मिट्टी क्या है ? व हृदय के क्या कार्य है ?
7. यह गतिविधि बच्चो के कक्षा व स्तर के अनुसार कराते हुए बच्चो से कहे कि वे अपने मन में उत्पन्न क्या और कौन सें संबंधित प्रश्न लिखकर प्रश्न पेटी पर भी डाले ।

गतिविधि से लाभ –:

1. बच्चे क्या और कौन प्रश्न सूचक शब्द का प्रयोग कर प्रश्न पूछना सीखेंगे।
2. संदर्भ के अनुसार इन प्रश्न सूचक शब्दो के लिये प्रयुक्त बहुवचन शब्द का प्रयोग कर प्रश्न पूछेंगे।
3. पाठवस्तु में बच्चो की रुचि बढेगी।
4. जिज्ञासा स्तर का क्रमशः विकास होगा ।
5. कक्षागत अध्ययन/ अध्यापन प्रक्रिया में बच्चो की सहभागिता बढेगी।

रघुवंश मिश्रा
बी.आर.पी. कोटा

क्रमशः

शिक्षा में नवाचार पार्ट– 4
प्रश्न सूचक शब्द और गतिविधि

क्रमांक 02 – प्रश्न सूचक शब्द कहॉ पर आधारित गतिविधि –

उदेश्य – बच्चे कहॉ प्रश्न सूचक शब्द का प्रयोग कर प्रश्न करना सीख जायें।

गतिविधि के चरण :–

1. शिक्षक कुछ स्थानो का चित्र दिखाकर बच्चो से पूछें कि ये चित्र किस जगह का है। सही उत्तर प्राप्त न होने की स्थिति में कुछ संकेत दें।

2. अब बच्चो से उनकी जानकारी के अनुसार कुछ स्थानों के नाम पूछे और श्यामपट पर लिखते जायें। जैसे –बच्चो ने चित्र देखकर बतलाया – बाजार, अस्पताल, गॉव, शहर, पाठशाला इत्यादि।

3. अब शिक्षक बच्चो से पूछे कि छुट्टियों में अपने माता पिता के साथ कहॉ जाते है तथा बच्चो से यह भी पूछे कि वे अपने मित्र व घर के लोगो को आते/जाते देखकर क्या पूछते है ?

4. इस गतिविधि में सभी बच्चो की सहभागिता प्राप्त कर बच्चो से कहे कि वें कहॉ से संबंधित प्रश्न लिखकर प्रश्न पेटी पर डाल दें।

गतिविधि से लाभ :–

1. बच्चे कहॉ का संबंध स्थानो से जोड़ना सीखेंगें।
2. बच्चों से कहॉ पर आधारित प्रश्न पूछने से सही उत्तर देना जानेगें।
3. स्थान सूचक चित्र अथवा शब्द देख/पढ़कर कहॉ का प्रयोग कर जिज्ञासाओ की पूर्ति करेंगें।

रघुवंश मिश्रा
बी.आर.पी. कोटा

क्रमशः

शिक्षा में नवाचार पार्ट–5

प्रश्न सूचक शब्द और गतिविधि

क्रमांक 03 – प्रश्न सूचक शब्द कब पद आधारित गतिविधि –

उदेश्य :– बच्चे कार्यो/घटनाओं का संबंध समय से जोड़ना सीख जायें।

गतिविधि के चरण :–

1. शिक्षक बच्चो को घड़ी दिखाकर पूछे कि घड़ी में/से हम क्या देखते/जानते है ?

2. बच्चों के द्वारा जवाब दिये जाने पर शिक्षक बच्चो से पूछे कि वे सुबह से रात में सोने तक क्या–क्या काम करते है व बच्चो के जवाब को श्यामपट पर लिखते जायें। जैसे – नहाना, खाना, स्कूल जाना, पढ़ना, खेलना, सोना, इत्यादि।

3. अब शिक्षक बच्चो के द्वारा किये जाने वाले कार्यो को समय के आधार पर पूछे कि वे इन कार्यो को कब करते है ? बच्चो के जवाब को श्यामपट पर लिखे। जैसे :– नहाना –सुबह, सोना– रात, इत्यादि।

4. अब शिक्षक बच्चो से ऐसे प्रश्न करें जिसका जवाब बच्चे अनुमानित रुप से दे ।

जैसे– तुम अपने मामा के यहॉ कब गये थे ?, बच्चो के जवाब को श्यामपट पर लिख ले जैसे – पिछले साल, चार माह पहले इत्यादि ।

5. अब शिक्षक बच्चो को बतलायें कि कब पर आधारित प्रश्नों का उत्तर दो तरह से दिया जाता है –1 निश्चित समय में, 2 अनिश्चित समय में।

6. शिक्षक बच्चो से कहे कि वे एक दूसरो से कब पर आधारित प्रश्न करें और प्राप्त जवाब को निश्चित समय और अनिश्चित समय के आधार पर अलग–अलग लिखें।

7. यह गतिविधि बच्चो के कक्षा व उम्र को ध्यान में रखकर कराते हुए बच्चो से कहें कि वे अपने मन में उत्पन्न कब पर आधरित प्रश्न लिखकर प्रश्न पेटी पर डाल दें ।

इससे लाभ :–

1. बच्चे समय के वर्गीकरण को समझेंगे।
2. अपने द्वारा कियें जाने वाले कार्यो को समय के साथ जोड़ना सीखेंगे।
3. कब पर आधरित प्रश्नो का सही उत्तर देना जानेगें।

रघुवंश मिश्रा
बी0आर0पी0 कोटा

क्रमश :

शिक्षा में नवाचार, पार्ट–6

प्रश्न सूचक शब्द और गतिविधि

क्रमांक 04. – प्रश्न सूचक शब्द किसका पर आधारित गतिविधि।

उद्देश्य :– बच्चे अधिकार/स्वामित्व जानना व अभिव्यक्त करना सीख जायें ।

गतिविधि के चरण :–

1. शिक्षक छात्रो से उनके कुछ चीजों को जैसे– कापी, पेन, बैग, अदि मांग कर टेबल के उपर रख दे।

2. शिक्षक टेबल पर रखें वस्तुओ को छात्रो को दिखाते हुए पूछे कि ये किसका है? वस्तु से संबंधित छात्र अपनी वस्तु को पहचानते हुए स्वाभाववविक रुप से बोलेगा –मेरा।

3. शिक्षक वस्तुओं को पुनः टेबल पर रखकर किसी एक छात्र को सामने बुलाये और कहे कि जिन छात्रों की वस्तु टेबल पर रखा हुआ है, उनहें बोलते हुए वापस करें। जैसे – यह तुम्हारा बैग, यह तुम्हारा कापी, यह तुम्हारा पेन इत्यादि।

4. शिक्षक इस गतिविधि को बस्तु बदल कर तब–तक करायें जब–तक सभी अधिकार/स्वामित्व सूचक शब्द जैसे – हमारा, उसका, उसकी, मेरा, तुम्हारा इत्यदि से सभी छात्र परिचित न हो जाये।

5. छात्रो के सम्मुख स्थित वसतु पर आधारित गतिविधि के प चात दूर स्थित वस्तु/जीव पर यह गतिविधि करावें। जैसे–वह किसका गाय है?,

इससे लाभ :–

1. बच्चे स्वामित्व सूचक शब्दों को पहचानना सीखेंगे।

2. इस पर आधरित प्रश्नों का सही जवाब देना सीखेंगे।

3. अपने आस पास की वस्तु/स्थान/जीवों पर किसका अधिकार/स्वामित्व है, यह जानने की जिज्ञासा उत्पन्न होगी।

4. निजी व सार्वजनिक स्वामित्व की अवधारणा का विकास होगा।

रघुवंश मिश्रा
बी0आर0पी0 कोटा

क्रमशः

शिक्षा में नवाचार, पार्ट–7
प्रश्न सूचक शब्द और गतिविधि

क्रमांक 05 – प्रश्न सूचक शब्द कितना पर आधरित गतिविधि।
उद्देश्य :– बच्चे संख्या, मात्रा, दूरी, लम्बाई, गहराई व उॅचाई को प्रतिकात्मक रूप में व्यक्त करना सीख जायें।

गतिविधि के चरण :–

1. चित्र दिखलाते हुए बतलाऐं कि ठोस पदार्थो को तराजू ,द्रव को लीटर व लम्बाई ,उॅचाई व गहराई को मापने के लिये मीटर का उपयोग करते है।
2. शिक्षक छात्रो से शाला के आस पास पाये जाने वाले कुछ ठोस पदार्थो जैसे – पत्थर, रेत व द्रव जैसे –पानी इत्यादि को तराजू व लीटर से माप कर दिखायें। मापने के पश्चात माप कितना बोलते हुए श्यामपट पर लिखते जाये। जैसे– पत्थर कितना किलो ग्राम–4 किलोग्राम, पानी कितना लीटर – 2 लीटर , इत्यादि।
3. इसी प्रकार मीटर की सहायता से कक्षा की लम्बाइ, चौड़ाई,व टेबल तथा बच्चों की उॅचाई मापकर श्यामपट पर लिखे व कितने मीटर बोलते हुए माप लिखते जायें। जैसे– कक्षा की लंबाई 15 मीटर, टेबल की उॅचाई 2 मीटर, इत्यादि।
4. मूर्तरुप में गतिविधि करने के चाक शिक्षक बच्चो को बतलाये कि कितना प्रश्न सूचक शब्दो का प्रयोग हम किसी वस्तु की संख्या , मात्रा, दूरी, लम्बाई, चौड़ाई, उॅचाई व गहराई जानने के लिये करते है। एसे वस्तु जिनकी संख्या 12 होने पर दर्जन शब्द का उपयोग करते है, के बारे में भी संक्षेप में बतलायें।
5. सभी बच्चो को यह गतिविधि स्वयं करने का अवसर दें व उनसे कहे कि कितना से संबंधित मन में आये प्रश्न लिखकर प्रश्न पेटी में डाले।

इससे लाभ :–

1. बच्चे प्रश्न सूचक शब्द कितना का उपयोग सही ढंग से करना सीखेंगे।
2. गणनीय व अगणनीय वस्तुओ की मापन प्रक्रिया को समझते हुए प्रयुक्त उपकरणो के बारे में जानेगे।
3. आवश्यकता व परिस्थति के अनुसार कितना प्रश्न सूचक शब्द पर आधारित प्रश्न किये जाने पर सही ढंग से उत्तर देना सीखेंगे।

रघुवंश मिश्रा
बी0आर0पी0 कोटा

क्रमशः

शिक्षा में नवाचार– पार्ट 8

प्रश्न सूचक शब्द और गतिविधि

क्रमांक–6 – कैसे पर आधारित गतिविधि

उदेश्य :– विभिन्न अवसरों पर अपनाए जाने वाले साधन/विधि/ढ़ंग के संबंध में बच्चे सीख जाए।

गतिविधि के चरण :–

1. शिक्षक बच्चों को बतलायें कि कैसे प्रश्न सूचक शब्दों से संबंधित प्रश्न का उत्तर दो प्रकार से दिया जाता है – (1) मूर्त रुप (2) अमूर्त रुप
2. प्रश्न सूचक शब्द कैसे का जवाब मूर्त रुप में तब दिया जाता है जब हमारे द्वारा अपनाये जाने वाले साधन प्रत्यक्ष रुप से भौतिक रुप में मौजुद हो। जैसे– तुम यहां से दिल्ली कैसे जाओगे? यहां कैसे से दिल्ली जाने के साधन के संबंध में जानने का प्रयास किया गया है। अतः इसका जवाब कार, बस, ट्रेन, प्लेन इत्यादि साधनों के रुप में दिया जाता है।
3. प्रश्न सूचक शब्द कैसे का जवाब अमूर्त रुप में तब दिया जाता है जब हमारे द्वारा अपनाये जाने वाले साधन/विधि/ढंग का संबंध हमारे तार्किकता/विश्लेषणामकता से संबंधित हो। जैसे – मिट्टी का अपरदन कैसे रोका जा सकता है? यहां कैसे से मिट्टी के कटाव को रोकने हेतु अपनाये जाने वाले तरिकों/विधियों के संबंध में जानने का प्रयास किया गया है। अतः इसका जवाब– (1) कटाव क्षेत्र में वृक्षारोपण कर, (2) पशुओं की चराई पर रोक लगाकर, (3) वर्षा जल को संरक्षित कर इत्यादि तरीकों के रुप में दिया जा सकता है।
4. मूर्त और अमूर्त दोनों रुपों को पर्याप्त उदाहरण के साथ समझाने के बाद बच्चों से प्रश्न करें और उन्ही को जवाब देने दे।
5. बच्चों को आपस में ऐसे ही प्रश्न करने व जवाब देने को प्रोत्साहित करें तथा निगरानी करते रहे।

इससे लाभ :–

1. बच्चे कैसे से संबंधित प्रश्नों का सही उत्तर देना सीखेगें।
2. तार्किकता और विश्लेषणात्मक शक्ति का विकास होगा।
3. किसी भी कार्य को करने में प्रयुक्त साधनों/तरीकों का परीक्षण करना सीखेगें।

क्रमशः

रघुवंश मिश्रा
बी.आर.पी. कोटा

शिक्षा में नवाचार– पार्ट 9

प्रश्न सूचक शब्द और गतिविधि

क्रमांक–7 – क्यो पर आधारित गतिविधि

उदेश्य :– बच्चे विविध कार्यो/घटनाओं व उनके होने में निहित कारणों को जान/समझ सके।

गतिविधि के चरण :–

1. शिक्षक बच्चों को विभिन्न कार्यो/घटनाओं व उनके होने/घटनें में निहित कारणों को उदाहरण देकर समझायें, जैसे– (1) तुम स्कूल क्यों आते हो? (2) हमे प्रतिदिन स्नान क्यों करना चाहिए? इत्यादि।
2. आरंभ में इस पर आधारित ऐसे छोटे–छोटे प्रश्न करें, जिनका कारण प्रत्यक्ष रुप से बच्चों के अनुभव के भीतर हो।
3. छोटे–छोटे कार्य कारण–प्रश्नों के अभ्यास के बाद इस पर आधारित ऐसे प्रश्न करें जिनका जवाब बच्चे तर्क के आधार पर दे। जैसे :–
   (1) हमे आपस में क्यों नही लड़ना चाहिए ?
   (2) धुम में कपड़ा जल्दी क्यों सुखता है? इत्यादि।
4. बच्चों को आपस मे क्यो पर आधारित प्रश्न करने को कहें। बीच–बीच में मार्ग दर्शन करते रहे।

इससे लाभ :–

1. बच्चें विभिन्न कार्यो के पीछे होने वाले कारणों को समझने का प्रयास करेगें।
2. तर्क के द्वारा घटनाओं का विश्लेषण करना सीखेगें।
3. वैज्ञानिक दृष्टिकोंण का विकास होगा।
4. विभिन्न प्रश्न सूचक शब्दों के आपस में संबंध को समझते हुये सही उत्तर मौखिक व लिखित रुप में देना सीखेगें।

क्रमशः

रघुवंश मिश्रा
बी.आर.पी. कोटा

शिक्षा में नवाचार– पार्ट 10

''हां'' और ''ना'' से संबंधित प्रश्न

प्रश्न सूचक शब्दों के प्रयोग पर आधारित इस लेख के माध्यम से मैं यह प्रयास कर रहा हूं कि बच्चें ना केवल उनसे पुछे गये प्रश्नों को भलि–भांती समझे बल्की वे इन प्रश्नों का उत्तर भी सहीं ढंग से देने में सक्षम बने। इसके अतिरिक्त बच्चें संदर्भ व परिस्थिति के अनुसार स्वयं सही प्रश्न कर सके। इसी क्रम में हां और ना से संबंधित प्रश्नों का महत्वपूर्ण स्थान है। हां और ना से संबंधित प्रश्न कोई सरल प्रश्न नही है, अपितु इससे विशेष और गंभीर प्रकृति की प्रश्नों की रचना होती है, क्योंकि इन प्रश्नों के अन्दर सभी प्रकार के प्रश्नों (क्या, कौन, कब, कहां, कितना, किसका, कैसे और क्यों) का सार निहित होता है। जैसे– शिक्षक ने बच्चों से कहा कि इस प्रश्न का उत्तर हां या ना में दो। सूर्य उर्जा का प्रमुख स्त्रोत है? इस प्रश्न का सही उत्तर वे ही बच्चें दे सकते है, जो जानते है कि–(1) सूर्य क्या है? (2) सूर्य सौर मंडल में कहां स्थित है? (3) सूर्य का अस्तित्व कब से है? (4) सूर्य की उर्जा किससे संबंधित है? (5) सूर्य का तापमान कितना है? (6) सूर्य में उर्जा का निर्माण कैसे होता है? (7) सूर्य उर्जा का प्रमुख स्त्रोत क्यों है?

सभी कक्षाओं के पाठ्य पुस्तकों में पाठ/अधाय के अंत में कुछ प्रश्न ऐसे होते है, जिनका उत्तर बच्चों को हां या ना में देना होता है। शिक्षक द्वारा इन प्रश्नों को हल कराते समय विशेष ध्यान व रुचि नही दिखाई जाती। मैं इसका कारण जानने का प्रयास किया तो पता चला कि बच्चें इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर अपने अनुमान से देते है। अर्थात् बच्चें ऐसे प्रश्नों का उत्तर बिना सोचे–समझे दे देते है। इस प्रक्रिया में कुछ बच्चों द्वारा दिया गया जवाब सही हो जाता है और कुछ बच्चों द्वारा दिया गया जवाब गलत। ऐसे प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करते समय शिक्षक को बच्चों की उत्तर देने के ढंग व हाव–भाव पर नजर रखनी चाहिए। इससे शिक्षक को पता चल जायेगा कि किस बच्चे ने इन प्रश्नों का उत्तर सही समझ के बाद दिया है और किस बच्चे ने अनुमान से।

इसे जानना आवश्य क्यों है :–

1. बच्चों कि अवधारणात्मक समझ की परीक्षण कर सके।
2. इस मिथक को तोड़ सके कि ऐसे प्रश्न सरल होते है और बच्चे ऐसे प्रश्नों का उत्तर अपनी इच्छा के अनुसार देते है।
3. यह जान सके कि ऐसे प्रश्नों का प्रयोग कहां और कब करें।

क्रमशः

रघुवंश मिश्रा
बी.आर.पी. कोटा

शिक्षा में नवाचार– पार्ट 11

''वस्तुनिष्ठ'' प्रकार के प्रश्न

वर्तमान में सभी परीक्षाओं में वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का महत्वपूर्ण स्थान है। कुछ परीक्षाएं तो ऐसे है, जिनमें परीक्षार्थीयों का मुल्यांकन केवल वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के माध्यम से किया जात है। वस्तुनिष्ठ प्रश्न अपने स्वरुप के आधार पर दो प्रकार के होत है–

1. सूचना–परक वस्तुनिष्ठ प्रश्न :– ऐसे वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के माध्यम से किसी पाठ्य वस्तु के संबंध में छात्रों द्वारा अर्जित सूचनाओं का मुल्यांकन किया जाता है।
   उदाहरण :– (1) हमारा देश स्वंतत्र हुआ–

(अ) 15 अगस्त 1937 (ब) 15 अगस्त 1947

(स) 15 अगस्त 1927 (द) 15 अगस्त 1957

छात्र ऐसे प्रश्नों का उत्तर पाठ्य वस्तु में दिये गये सूचनाओं/तथ्यों के आधार पर, विकल्पों में से चयन कर देते है।

2. अवधारणा–परक वस्तुनिष्ठ प्रश्न :– ऐसे वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के माध्यम से किसी पाठ्य वस्तु के संबंध में छात्रों द्वारा अर्जित गहरी समझ का मुल्यांकन किया जाता है।

उदाहरण :– (1) भारत पर अंग्रेजो का शासन स्थापित हुआ–

(अ) अंग्रेज शक्ती थे (ब) वे ज्यादा पढें–लिखे थे

(स) वे प्रशासनिक अनुभव में दक्ष थे (द) भारतीयों में फूट थी।

इसके अतिरिक्त सत्य/असत्य व उचित संबंध जोड़ों भी वस्तुनिष्ठ प्रकार के ही प्रश्न होते है, किन्तु इनका स्वरुप कुछ अलग होता है। सत्य/असत्य से संबंधित प्रश्नों में दिये गये विकल्पों मे से कोई एक विकल्प सत्य या असत्य होता है, वहीं उचित संबंध जोड़ों में सही विकल्प का क्रम बदलकर प्रश्न करने को दिया जाता है।

उदाहरण :– (1) निम्न में से सत्य कथन बतलाओं –
(अ) सूर्य एक ग्रह है (ब) सूर्य एक उपग्रह है
(स) सूर्य सौर मंडल का केन्द्र बिन्दु है (द) सूर्य एक नक्षत्र है।
उदाहरण :– (2) उचित संबंध जोड़ों –

(अ) इकबाल	–	(अ) तुम मुझे खून दो
(ब) सुभाष चन्द्र बोस	–	(ब) भारत छोड़ो
(स) महात्मा गांधी	–	(स) स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है
(द) बाल गंगाधर तिलक।	–	(द) सारे जहां से अच्छा

बच्चों के बौधिक क्षमता विकास में वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का महत्वपूर्ण स्थान है। अतः बच्चों के कक्षा व विषय अनुसार वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का पर्याप्त अभ्यास कराया जाना उचित होगा। चूंकि ऐसे प्रश्नों में विकल्पों की संख्या एक से अधिक होती है? इसलिये इन्हे बहुविकल्पीय प्रश्न भी कहा जाता है।

इसका महत्व :–

1. बच्चों में निश्चयात्मकता का विकास होता है।
2. बच्चे बहुत सारे विकल्पों मे से सही विकल्पों का चयन करना सीखते है।
3. अवधारणाओं को सार रुप में प्रस्तुत करना सीखते है।
4. तर्क शक्ति का विकास होता है।
5. स्मरण शक्ति विकसित होती है।

रघुवंश मिश्रा
बी.आर.पी. कोटा

क्रमशः

शिक्षा में नवाचार– पार्ट 12

विस्मयादिबोधक चिन्हों का प्रश्न के रुप में प्रयोग

शब्दों के अतिरिक्त शारीरिक भाव–भंगिमाओं से भी प्रश्न पुछने का कार्य किया जाता है। इसमें हमारी हाथो, भुजाओं व आंखों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। कभी–कभी व्यक्ति की मुसकुराहट भी प्रश्न सूचक संकेतो का कार्य करती है। ये शारीरिक भाव–भंगिमायें जहां एक ओर सभी प्रश्न सूचक शब्दों (क्या, कौन, कहां, कब, किसका, कितना, कैसे, क्यों) के प्रतिकों के रुप में उपयोग में लाया जाता है, वहीं दुसरी ओर इन शारीरिक भाव–भंगिमाओं के माध्यम से आश्चर्य प्रकट करके भी प्रश्न पुछने का कार्य किया जाता है। जैसे– क्या है, जानने के लिये हाथ के पंजो को उगलियों सहित अर्द्धवृत्त की दिशा में घुमाना, कौन है, जानने के लिये आंखों के भौव को उपर की ओर ले जाना तथा किसी को कार्य करते हुये देखकर होठाों पर हल्की सी मुसकुराहट लाकर देखना इत्यादि। ये सभी संकेत बिल्कुल वैसे ही जिज्ञासा पुर्ति का कार्य करते है जैसे प्रश्न सूचक शब्द।

जब आश्चर्य सूचक संकेतो को शब्दों में परिवर्तित कर प्रश्न पुछा जाता है, तो यह विस्मयादिबोधक प्रश्न सूचक शब्द कहलाता है। इस प्रकार के प्रश्न में विशिष्ट प्रश्न सूचक शब्द छिपा रहता है और इसका स्थान शब्द/वाक्य के अंत में विस्मयादिबोधक चिन्ह ! ले लेता है। जैसे– कक्षा में कुछ बच्चे ऐसे होते है जो बार–बार शरारत करते है और कुछ बच्चे ऐसे भी होते है जो शरारत नही करते, किन्तु जब शिक्षक शरारत नही करने वाले बच्चे को शरारत करते हुये पाता है तो वह विस्मयादिबोधक शब्द/वाक्य का प्रयोग कर ही अपनी जिज्ञासा की पुर्ति करता है। जैसे– शिक्षक पुछता है– तुम भी !। इस उदाहरण से स्पष्ट है कि विस्मयादिबोधक शब्दों/वाक्यों का प्रयोग प्रश्न सूचक के रुप में तभी किया जाता है, जब हमारे मन में किसी वस्तु/व्यक्ति के कार्य के संबंध में विपरित भाव/आश्चर्य उत्पन्न हो। ऐसे प्रश्न सूचक संकेतो/शब्दों/वाक्यों का कक्षा में उपयोग करते हुये बच्चों को भी प्रयोग का पर्याप्त अवसर दिया जाना चाहिए, ताकि बच्चे प्रश्न करने के सभी विधाओं मे दक्ष हो सके।

इससे लाभ :–

1. बच्चे प्रश्नों के महत्व को समझेगें।
2. प्रश्न करने के विविध तरिको से परिचित होगें।
3. प्रश्न के अनुसार उत्तर देना सीखेगें।
4. शब्दों/वाक्यों के अर्थो में विभिन्नता को समझेगें।

क्रमशः

रघुवंश मिश्रा
बी.आर.पी. कोटा

शिक्षा में नवाचार पार्ट–13
तथ्यात्मक प्रश्न

अब हम प्रश्न सूचक शब्दों से बनने वाले प्रश्नों को प्रश्न के उद्देश्यों के अनुरुप समझने का प्रयास करते है। जैसा कि इस लेख के भाग 2 मे बतलाया गया है कि प्रश्न सूचक शब्दों के उपयोग के अनुसार प्रश्नों को दो भागों में बांट सकते है –

1. सूचना परक और 2 तर्क परक। सूचना परक प्रश्नों को ही तथ्यात्मक प्रश्न कहा जाता है, जबकि तर्क परक प्रश्न अवधारणात्मक प्रश्नों की श्रेणी के होतें है ।

   तथ्यात्क प्रश्नों का मुख्य उद्देश्य किसी निश्चित विशय सामाग्री पर निश्चित तथ्यो की जानकारी प्राप्त करना/देना होता है। प्राथमिक स्तर पर पढ़ाये जाने वाले सभी विशयों का मुख्य उद्देश्य बच्चो को विशयगत आरंभिक तथ्यो की जानकारी देना ही होता है। अतः इस स्तर पर तथ्यात्मक प्रश्नों से संबंधित अभ्यास के कार्य पर्याप्त संख्या/मात्रा मे रखे गये है। इस प्रकार के प्रश्नो का आरंभ क्या, कौन, कहॉ, कब, किसका और कितना जैसे प्रश्न सूचक शब्दों से होता है, साथ ही आरंभिक स्तर पर इन प्रश्न सूचक शब्दो के उपयोग से बनने वाले प्रश्नो का मुख्य उद्येश्य मूर्त रुप में जानकारी प्राप्त करना होता है। इन प्रश्न सूचक शब्दो के उपयोग से अमूर्त जानकारियॉ भी प्राप्त की जाती है किंतु तुलनात्क रुप से इनकी संख्या कम होती है। जैसें – 1. यह क्या है? 2. यह कौन है? 3. यह कहॉ पाया जाता है? 4. तुम स्कूल कब आते हो? 5. यह किसका जूता है? इत्यादि इस प्रकार के प्रश्नो के सहायता से निश्चित तथ्यात्मक जानकारी प्राप्त की जाती है। इन्ही प्रश्न सूचक शब्दो उपयोग कर उमूर्त तथ्यात्मक जानकारियां भी प्राप्त की जाती है किंतु उनकी संख्या कम होती है । जैसे – पत्ती के क्या कार्य है?, उभयचर प्राणी कौन है ? इत्यादि।

तथ्यात्मक प्रश्नो का महत्व :–

1. बच्चो को अपने आस पास की वस्तुओं/जीवो/घटनाओ की जानकारी प्राप्त होती हैं।
2. मूर्त और अर्मूत वस्तुओ के गुणो के आधार पर वर्गीकरण और तुलना करना सीखता हैं।
3. संख्याओ/मात्राओ की अवधारणा पुश्ट होती हैं।
4. स्मरण शक्ति का विकास होता हैं।
5. तथ्यो को क्रमबद्ध रुप में ग्रहण करने,रखने व उपयोग करने की क्षमता का विकास होता हैं।

रघुवंश मिश्रा
बीआरपी कोटा

क्रमशः

शिक्षा में नवाचार पार्ट–14
अवधारणात्मक प्रश्न

सरल शब्दों में अवधारणा का अर्थ निश्चत नियम व सिद्धांत है जिस पर किसी वस्तु या घटनाओ का होना निर्भर करता है। साथ ही साथ ये अन्य वस्तुओं/घटनाओ के होने की प्रक्रिया को भी प्रभावित करता है अर्थात अन्तः संबंधित होते है जैसे– सूर्य और चंद्र ग्रहण क्यो होते है? यह एक अवधारणात्मक प्रश्न है क्योंकि यह पृथ्वी के सूर्य कें चारो ओर पश्चिम से पूर्व की ओर घूमने के निश्चित नियम/ सिद्धांत पर आधारित है। इसके अतिरिक्त ये दिन रात का होना, ऋतु परिवर्तन इत्यादि घटनाओ से भी अंतः संबंधित होते है। अवधारणत्मक प्रश्नो को ही तर्क परक प्रश्न कहा जाता है तथा इसका आरंभ प्रायः कैसे और क्यों जैसे प्रश्न सूचक शब्दो से होता है।

बच्चे ऐसे प्रश्नों के उत्तर देने व लिखने में ज्यादा त्रुटि करते है। अतः ऐसे प्रश्नो का अभ्यास प्राथमिक स्तर से व्यापक रुप में कराया जाना चाहिए। साथ ही साथ यह भी ध्यान रखना होगा की ये बच्चे ऐसे प्रश्नो का उत्त समझकर तर्क पूर्ण ढंग से दें न कि याद कर। समझ/तर्क के स्थान पर याद कर उत्तर देने/लिखने का ही परिणाम है कि बच्चे ऐसे प्रश्नो का उत्तर परीक्षा के बाद नही दे पाते या त्रुटि पूर्ण देते है ।

विज्ञान विशयों में घटनाओं से संबंधित अवधारणाएँ जहॉ निश्चित होती है वही सामाजिक विशयो में घटनाओ से संबंधित अवधारणओ में समय व परिस्थति के अनुसार आंशिक परिवर्तन स्वीकार्य होते है। जैसे– ग्रहण क्यों होते है? कि अवधारणा निश्चित है। किंतु परिवार का स्वरुप कैसे और क्यों परिवर्तिति हो रहा है की अवघारणा में समय और परिस्थिति के अनुसार आंशिक परिवर्तन हुआ है और आगे भी हो सकता है किंतु यह बात सत्य है कि अवधरणाओं में जो भी आंशिक परिवर्तन होता है वह तर्कपूर्ण प्रतिमानो का अनुसरण करता है, अर्थात संबंध्द होते है न कि असंबध्द ।

एक जागरुक शिक्षक को इस सभी पहुलुओ को ध्यान मे रखकर कक्षा शिक्षण करना चाहिए। ऐसे प्रश्नो के माध्यम से अवधारणा स्पस्ट करते समय बच्चो के आस पास व उनके व्यवहारिक अनुभवो से जुड़े उदाहरण पर्याप्त रुप से प्रस्तुत करे। इसके लिये शिक्षक को पाठ्य वस्तु के उद्येश्य, उद्येश्य पूर्ती हेतु शिक्षण रणनीति व शिक्षण सामाग्री का उपयोग विशेश कर विज्ञान विषयो के अध्यापन में पूर्व से तैयार करके रखना होगा। तभी बच्चो मे विशयगत अवधारणओ के संबंध में सही समझ विकसित होगी।

अवधारणात्मक प्रश्नों के महत्व –

1. बच्चे तर्क पूर्ण ढंग से सोचना,समझना व विश्लेषण करना सीखेगें।
2. वर्तमान मे घटित घटनाओं को भूत व भविश्य के परिप्रेक्ष्य में समझना सीखेंगें।
3. कल्पना शक्ति विकसीत होगी।
4. विभिन्न घटनाओ का तुलनात्मक अध्ययन करना सीखेंगे।

रघुवंश मिश्रा
बीआरपी कोटा

क्रमशः

शिक्षा में नवाचार पार्ट–15

व्युत्पन्न प्रश्न

कभी–कभी हम पाते है हि प्रश्नो के माध्यम से उत्तर देते/लेते समय उत्तर में ही दूसरा प्रश्न निहित होता है अर्थात प्रश्न और उत्तर और फिर उससे प्रश्न की एक श्रृंखला बनती चली जाती है। ऐसे प्रश्न व्युत्पन्न प्रश्न कहलाते है। व्युत्पन्न प्रश्न जहॉ एक ओ विशय वस्तु को क्रमबध्द रुप में आगे बढ़ाने में सहायक होता है, वही दूसरी ओर इससे प्रस्तुत विशय वस्तु के संबंध में पूर्ण और तार्किक जानकारी भी प्राप्त होती है न्यायालयीन प्रकरणों में व्युत्पन्न प्रश्नो की महत्वपूर्ण भूमिका होती है उदाहरण –

1. तुम कहॉ जा रहे हो ?

उत्तर – मै सब्जी लेने बाजार जा रहा हूॅ।

2. तुम बाजार में क्या–क्या सब्जी खरीदोगे ?

उत्तर – मै बाजार में हरी सब्जियॉ खरीदूंगा।

3. तुम बाजार में हरी सब्जी ही क्यों खरीदोगे ?

उत्तर – हरी सब्जियॉ स्वास्थ्य के लिये लाभकारी होते है।

4. हरी सब्जियॉ स्वास्थ्य के लिये लाभकारी क्यों होते है?

उत्तर – हरी सब्जियों में पौष्टिक तत्व (विटामिन, प्रोटीन, खनिज लवण) ज्यादा मात्रा में पायें जाते है।

5. पौष्टिक त्तव से हम कैसे स्वस्थ रहते है ?

उत्त्र – हमारे शरीर में आवश्यक तत्वों की पूर्ति कर उपापचयी क्रियाओ को नियंत्रित व संतुलित करता है।

6. शरीर को पौष्टिक तत्व न मिले तो क्या होगा?

उत्तर – शरीर में आवश्यक तत्वो की कमी हो जायेगी और हम बिमार पड़ जायेगे।

इस प्रकार हम देखते है कि व्युत्पन्न प्रश्नो की कोई सीमा नही होती। इसकी सीमा प्रश्न कर्ता व उत्तर देने वाले की बौध्दिक क्षमता व तर्कशीलता पर निर्भर करता है। अतः शिक्षक को अपने कक्षा में ऐसे प्रश्नों का प्र्याप्त अभ्यास कराना चाहिए।

इससे लाभ :–

1. बच्चो में सही संवाद स्थापित करने की क्षमता का विकास होगा।
2. बच्चे प्रस्तुत विषय वस्तु को पूर्णरुप से समझेंगें।
3. प्रस्तुत विषय वस्तु के संबंध में एकाग्रता व रुचि बढ़ेगी।
4. प्रश्नो के विविधरुप व प्रश्न करने के विविध ढंग से परिचित होगे।
5. सामान्य चर्चा के माध्यम से लोगो से संबंध स्थापित करने में सक्षम होगे।

रघुवंश मिश्रा
बीआरपी कोटा

क्रमशः

शिक्षा में नवाचार पार्ट–16
मुख्य व पूरक प्रश्न

कभी–कभी हम यह भी पाते है कि प्रश्नों के माध्यम से हम जो जानकारी प्राप्त करना चाहते है, वह जानकारी एक ही प्रश्न अथवा प्रथम प्रश्न से ही प्राप्त नही होती और आपनी जानकारी को पूर्ण बनाने के लिये हमें उसी से संबंधित दूसरा किंतु छोटा प्रश्न करना पड़ता है। इस परिस्थिति में हमारे द्वारा किया गया प्रथम प्रश्न मुख्य प्रश्न और जानकारी की पूर्णता के लिये किया गया दूसरा संक्षिप्त प्रश्न पूरक प्रश्न कहलाता है। उदाहरण– 1. आदिमानव कहॉ रहते थे और क्यो? 2. पहिये का आविष्कार कब हुआ? इससे जीवन कैसे परिवर्तित हुआ? 3. मदन कौन था ? अमीर बनने के लिये उसने क्या सोचा?

उपरोक्त उदाहरण कक्षा तीन के पाठ्य पुस्तक से लिये गये है। यद्यपि प्राथमिक स्तर पर केवल मुख्य प्रश्न ही रखे गये है और पूरक प्रश्नो को भी मुख्य प्रश्न के रुप में पूछा गया है किंतु कक्षा बढ़ने के साथ–साथ पूरक प्रश्नो का भी अभ्यास कराया जाना उचित होगा। संसदीय प्रकरणों में ऐसे प्रश्नों का उपयोग बहुत होता है।

मुख्य और पूरक प्रश्नों के महत्व :–

1. समग्र जानकारी प्राप्त करने में– मुख्य प्रश्न के तुरंत बाद पूरक प्रश्न पूछने अथवा रखने का उद्देश्य संबंधित पाठ्य वस्तु के संबंध में उसी समय समग्र जानकारी प्राप्त करना होता हैं।
2. अवधारणात्मक समझा विकसित करने में– चूकि मुख्य और पूरक प्रश्नो द्वारा समग्र जानकारी मिलती है, इसलिये इससे पाठ्य वस्तु के संबंध में अवधारणा भी स्पस्ट रुप से विकसित होती है ।
3. एकाग्रता का विकास – सम्पूर्ण पाठ्य वस्तु को एकाग्रता के साथ ग्रहण किया जाता है। पाठ्य वस्तु पढ़ते समय यह सदैव ध्यान रखना चाहिए कि मुख्य प्रश्न के पहले और बाद की विषय वस्तु से और क्या–क्या प्रश्न पूछा जा सकता है?
4. तार्किकता का विकास – पूरक प्रश्न एक प्रकार से मुख्य प्रश्न का स्पष्टीकरण या व्याख्या होता है, इससे कार्य–कारण संबंध को ध्यान में रखकर ऐसे प्रश्नो का उत्तर दिया जाता हैं। इससे तार्किकता का विकास होता है।
5. अन्तः संबंध स्थापित करने की क्षमता का विकास – मुख्य और पूरक प्रश्नो के उत्तर एक दूसरे से अन्तःसंबंधित होते है अर्थात दोनों प्रश्नों के बिना उत्तर पूर्ण नही होता। ऐसे प्रश्नो से विभिन्न तथ्यों/घटनाओ में अन्तःसंबंध स्थापित करने की क्षमता का विकास होता है।

इससे लाभ –

1. पूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।
2. सही उत्तर देने/लिखने में सहायता प्राप्त होती है
3. प्रश्न करने की क्षमता का विकास होता है।
4. बौध्दिक विकास होता है।

रघुवंश मिश्रा
बीआरपी कोटा

क्रमशः

शिक्षा में नवाचार पार्ट–17
स्वतंत्र प्रश्न

हम सब को बच्चो के साथ रहने व बात करने का अनुभव है। बच्चे जब तीन वर्ष की उम्र से सही ढंग से बोलना आरंभ करते है, तभी से वे हमसे बहुत कुछ जानने का प्रयास करते है। इस वार्तालाप में हम यह भी पाते है कि बच्चे के मन में जो भी विचार आता होगा,वे उसके अनुरुप अपने बड़ो से बात करते है। हम यह भी पाते है कि उनके मन में विचारो का क्रम बदलते रहता है अर्थात वे किसी एक विषय के बारे मे चर्चा करते हुए उसी वक्त दूसरे विषयो के संबंध में बात करने लगते है। उदाहरण– जब बच्चे अपने घर के किसी बड़े सदस्य के साथ कही बैठा या घूमते रहता है तो वह पूछता है कि हम यहॉ क्यो बैठे है या हम कहॉ जा रहे है ? इसके तुरंत बाद मान लो वह बच्चा किसी चिड़िया या जानवर को देख लेता है तो वह उसके बारे में पूछने लगता है कि यह क्या है? यह कहॉ से आया है ? इत्यादि। इस प्रकार हम देखते है कि बच्चो के मन में उत्पन्न संदर्भ व परिस्थिति निरंतर बदलते रहती है और इस निरंतरता के कारण बच्चो के प्रश्नो की प्रकृति भी बदलते रहती है। इस प्रकार बच्चो के द्वारा किये गये वह प्रश्न जो उनके मन में उत्पन्न संदर्भ व परिस्थिति के अनुसार बदलता रहे, स्वतंत्र प्रश्न कहलाता है। बच्चो की औपचारिक शिक्षा आरंभ होने के पूर्व उनके पास जानकारियो का जो समृध्द आधार होता है उसका मुख्य कारण स्वतंत्र प्रश्न ही होते है।

स्वतंत्र प्रश्न का महत्व :–

1. बच्चो की इच्छा व रुचि के अनुरुप होती है। बच्चे जिस विषय के सबंध में जहॉ,जब और जितना जानना चाहते है जानने का प्रयास करते है।
2. स्वतंत्र प्रश्नो के माध्यम से बच्चो के मन में उत्पन्न जिज्ञासाओ की स्वाभाविक प्रस्फूटन होती है अर्थात बच्चे बिना किसी भय व हिचक के प्रश्न करते है
3. बच्चो के अनुभवों को विस्तार होता है। बच्चें अपने आस पास की उन सारी चीजों के संबंध में जानने का प्रयास करते है जिनसे उनका साक्षात्कार होता है

निश्चित क्षेत्र में आगे बढ़ने को प्रेरित करता है। हम यह पाते है कि बच्चे अपने इस उम्र में जो व्यापक अनुभव प्राप्त करता है उसी में से किसी न किसी एक क्षेत्र में आगे बढ़ने हेतु उनका मनोवैज्ञानिक आधार तैयार करता है। यह बात अलग है कि यह पूर्णरुप से स्पस्ट नही होता किन्तु यह भी सत्य है कि समाज में जिनते भी विलक्षध प्रतिभा से सुशोभित लोग हुए है उनके मनोवैज्ञानिक आधार की नींव इसी समय पड़ा था।

1. चितन व तर्क करने की शक्ति का विकास होता है। चूकि बच्चे प्रत्येक वस्तु के संबंध में उत्पन्न जिज्ञासाओ की पूर्ति करना चाहते है, इसलिये वे विविध प्राकर के प्रश्न करते है। उनके द्वारा किये गये प्रश्नो के जवाब नही मिलने के बाद भी बच्चे उस विशय के बार में स्वयं सोच विचार कर अपने जिज्ञासाओ की पूर्ति करते है। इससे उनमें सवतंत्र चिंतन व तर्क करने की क्षमता का विकास होता है।

रघुवंश मिश्रा
बीआरपी कोटा

क्रमशः

शिक्षा में नवाचार पार्ट–18
निर्देशित प्रश्न

वह बच्चा जो जब भी बात करता, प्रश्न ही पूछता, जब कक्षा एक में प्रवेश करता है, धीरे–धीरे शांत होने लगता है, जो बढ़ते हुए कक्षा के साथ–साथ लगभग खत्म ही हो जाता है। आखिर वहॉ ऐसा क्या होता है कि अब एक–दो बच्चे ही प्रश्न करते है और वह भी केवल एक–दो प्रश्न ही।

शाला का परिवेश, अपरिचितो से सामना और शिक्षको द्वारा श्यामपट पर विषयों का प्रस्तुतीकरण, बच्चो के स्वतंत्र मन को एक निश्चित दायरे में बांधने लगते है। बच्चे जब नियमित रुप से शाला आना आरंभ करता है तब यह अनुभव करता है कि यहॉ होन वाले सभी प्रकार के चर्चा का आधार विषय है, जो एक निश्चित संदर्भ पर आधरित होता है, तब उसका मन भी संदर्भ व परिस्थिति अभिमूख होने लगता है। ऐसी स्थिति में बच्चो के मन मे जो भी प्रश्न उत्पन्न होगा उसका आधार शिक्षक द्वारा विषयों का प्रस्तुतीकरण होता है। यदि शिक्षक कुछ नवीन व रोचक तरीको से विशयो का प्रस्तुतीकरण किया गय तो यह बच्चो में रुचि उत्पन्न कर, कुछ प्रश्न उत्पन्न होन का कारण बन सकता है अन्यथा नही। शिक्षक द्वारा भी बच्चो से ऐसे प्रश्न किये जाते है,जो उनके द्वारा प्रस्तुत विषयों पर आधारित होता है और बच्चो से भी उनकी अपेक्षा होंती है कि वे भी यदि प्रश्न करें वह भी उनके प्रस्तुतीकरण के आसपास हो। इस प्रकार शिक्षक और बच्चो के द्वारा किये गये वह प्रश्न जिसे संदर्भ व परिस्थिति द्वारा निश्चित कर दी गयी हो **निर्देशित प्रश्न** कहलाता है। जैसे– शिक्षक ने बच्चो को वफादार नेवला पाठ पढ़ाया, जिसमें नेवले ने सांप को मार कर बच्चे की जान बचाया था और अंत में नेवला को स्वयं अपना जान गंवाना पड़ा था। इस पाठ को पढ़ाते समय शिक्षक बच्चो से वही प्रश्न करता है जो इस पाठ से संबंधित हो। जैसे– बच्चा कहॉ सोया था ? सांप घर के अंदर कहॉ से आया? नेवले ने बच्चे की जान कैसे बचाई? इत्यादि। इसी प्रकार यदि बच्चे भी कुछ प्रश्न करते है तो भी इसी से संबंधित होते है। जैसे – मां बिना देखे नवले को क्यों मारी? नेवला खाट के पास ही क्यो नही बैठा रहा ? इत्यादि।

उपरोक्त तथ्यो से स्पष्ट है कि औपचारिक शिक्षा आरंभ होने के साथ ही बच्चे निर्देशित प्रश्नो के आस पास उलझते चले जाते है और उनमें स्वतंत्र प्रश्नो की प्रवृत्ति का सतत हास् होने लगता है। किंतु इसका अभिप्रायः यह नही है कि निर्देशित प्रश्नो का कोई महत्व ही नही है ।

निर्देशित प्रश्नो के महत्व :–

1. बच्चो के स्वाभाविक प्रवृत्ति के अनुसार विषयो के प्रति आकर्षण बढ़ता है और वे विषयगत विशेषज्ञता प्राप्त करने की ओर अग्रसर होते है।
2. जानकारियो का संग्रह होता है। निर्देशित प्रश्नों के द्वारा बच्चे किसी विषय विशेष से संबंधित सभी तथ्यों की जानकारी प्राप्त करने के लिये प्रेरित होते है।
3. व्यावहारिक जीवन में सामंजस्य स्थापित होता है। हम प्रायः पाते है कि हमारा व्यावहारिक जीवन निर्देशित प्रश्नो और उनके जवाबो के आसपास ही घूमते रहता है।
4. समाधान में सरल होता है।चूकि निर्देशित प्रश्न निश्चित संदर्भो व परिस्थितियो पर निर्भर करता है, इसलिये ऐसे प्रश्नो का जवाब भी उन्ही संदर्भो और परिस्थितियो में निहित होता है। अतः प्रश्नो का हल शीघ्र हो जाता है।

रघुवंश मिश्रा
बीआरपी कोटा

क्रमशः

शिक्षा में नवाचार पार्ट–19
स्वतंत्र/बनाम निर्देशित प्रश्न

जीवन में सभी चींजो का सामंजस्य होना आवश्यक है। इसी प्रकार बच्चो के स्वाभाविक मानसिक विकास में स्वतंत्र और निर्देशित दोनो तरह के प्रश्नो की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। किसी भी एक क्षेत्र का एक तरफा बढ़ या घट जाना उचित नही होता। अतः बच्चो के औपचारिक शिक्षा आरंभ होने के साथ ही,जिसमें निर्देशित प्रश्नो के अभ्यास की पर्याप्त अवसर होते है, के अतिरिक्त स्वतंत्र प्रश्नों के लिये भी शिक्षक द्वारा अलग से प्रयास किया जाना चाहिए। इसके लिये हमारे शिक्षक अपने अपने शालाओ में कुछ कार्य कर सकते है –

1. प्रश्न काल का आयोजन –: शाला अवधि में कोई भी कालखण्ड के कुछ समय बच्चो के प्रश्न काल के रुप में निश्चित हो। इस कालखण्ड में बच्चो को यह स्वतंत्रता हो कि वे कुछ भी प्रश्न कर सकते है जैसा कि वे अपने 3–6 वर्ष की आयु में करते थे।
2. प्रश्न पेटी का उपयोग –: कुछ बच्चे हिचक व भय के कारण कोई भी प्रश्न नही करते। ऐसे व अन्य बच्चो के लिये शाला में कम से कम एक प्रश्न पेटी अवश्य रखे, जिनमें बच्चे अपने मन में उत्पन्न प्रश्नो को लिखकर डाले व समाधान प्राप्त कर सके।
3. प्रोत्साहन –: कभी–कभी शिक्षक के पास कुछ बच्चे स्वतंत्र प्रयन करते है, किंतु शिक्षक द्वारा विषयबद्ध नही हाने के कारण या तो ध्यान नही दिया जात या ऐसे बच्चो को हतोत्साहित कर दिया जाता है। इससे बच्चे प्रश्न करना ही छोड़ देते है। अतः बच्चो के तरफ से आये सभी प्रश्नो का सम्मान करते हुए शिक्षक को जवाब देना चाहिए।
4. जीवन से संबद्ध घटनाओ का अवलोकन –: मानव व समाज के क्रमिक विकास को समझने के लिये यह आवश्यक है कि शिक्षक उन सभी तथ्यो, अवसरो व घटनाओ का बच्चो को प्रत्यक्ष अवलोकन करने का अवसर दें। इससे बच्चो में उन घटनाओ के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न होगी जो प्रश्नो के उत्पत्ति का आधार बनेगा।
5. आपस मे चर्चा करने का अवसर देना– कक्षा में बच्चो द्वारा की जा रही चर्चा को हल्ला/शोरगुल मानकर दबा दिया जाता है। जबकि इसका बच्चो के जीवन पर बहुत ही सकारात्मक असर पड़ सकता है बशर्ते यह सुनियोजित रुप से हो । यही वह पल होता है जब बच्चे अपने अनुभवों को विभिन्न बच्चो के मध्य बांटते हुए, उनके अनुभवों को ग्रहण करते है। अनुभवो का इस तरह आपस में वितरण अनेक स्वतंत्र प्रश्नो को जन्म देता है जो बच्चों के मानसिक विकास में सहायक होते है ।

इससे लाभ :–

1. बच्चो के मन से भय व हिचक दूर होंगी।
2. बच्चो का स्वस्थ्य व संतुलित मानसिक विकास होगा।
3. शिक्षक की शिक्षण रणनीति की प्रभावशीलता बढेगी
4. शिक्षक और बच्चो का आपसी संबंध मधुर बनेगा।
5. बच्चो की सक्रिय सहभागिता प्राप्त होगी।

रघुवंश मिश्रा
बीआरपी कोटा

क्रमशः

शिक्षा में नवाचार – पार्ट 20
वर्णानात्मक प्रश्न

जब प्रश्नों के द्वारा किसी वस्तु, स्थान तथा घटनाओं के संबंध में जैसा कि वह होता है, के संबंध में पूर्ण जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है, तो ऐसे प्रश्न वर्णनात्मक प्रश्न कहलाते हैं।

वर्णनात्मक प्रश्नों के उद्देश्य –:

1. वस्तु, स्थान व घटनाओ ंकी विस्तृत जानकारी प्राप्त करना।
2. जो वस्तु, स्थान व घटना वास्तविक रुप में जैसा हो, हुबहु वैसा ही जानकारी प्राप्त करना।
3. बच्चों में प्रत्येक विषय वस्तु को गंभीरता से ग्रहण की प्रवृत्ति का विकास करना ।
4. बच्चों में अपने विचारों को क्रमबद्ध रुप से प्रस्तुत करने की क्षमता विकसित करना ।
5. लेखनशैली विकसित करना।

वर्णनात्मक प्रश्नों के उदाहरण –: प्राथमिक स्तर पर बच्चों के कक्षा एवं उम्र के अनुसार वर्णनात्मक प्रश्नों का स्वरुप अलग अलग होता है। ये प्रश्न ऐसे हों जिनका बच्चों ने अपने जीवन में प्रत्यक्ष अनुभव/साक्षात्कार किया हो। जैसे–कक्षा एक से तीन तक के बच्चों को ऐसे वस्तु/स्थान/घटना से संबंधित वर्णनात्मक प्रश्न दिया जाना चाहिए, जो उनके अनुभव से सामन्जस्य रखता हो। जैसे किसी एक पालतू पशु के संबंध में संक्षिप्त वर्णन करो– 1. गाय 2. कुत्ता 3. घोड़ा। ये सभी पशु बच्चों के प्रत्यक्ष अनुभव में होने के कारण वे इसका वर्णन कर सकते हैं, किंतु यदि उन्हे भालू, हाथी, दरियाई घोड़ा इत्यादि के संबंध में वर्णन करने को कहा जाये तो वे वर्णन नही कर पायेंगें। इसी प्रकार बच्चो से उनके आस पास मनाये जाने वाले त्यौहारों जैसे होली, दिपावली, मेंला इत्यादि का वर्णन करने सें संबंधित प्रश्न दिया जा सकता है।

इससे लाभ –:

1. बच्चे अपने सम्मुख घटित घटनाओं/विषय वस्तु को गंभीरता से समझानें का प्रयास करेगें।
2. विचारों के प्रस्तुतीकरण में क्रमबद्धता आयेगी।
3. स्मरण शक्ति विकसित होगी।
4. जीवन के लिये उपयोगी व सारगर्भित बातों को ग्रहण करना सीखेंगे।
5. बच्चों के द्वारा उपयोग किये जाने वाले शब्द व वाक्य विन्यास में सुधार होगी।

क्रमशः

रघुवंश मिश्रा
बी0आर0पी0 कोटा

शिक्षा में नवाचार पार्ट – 21
व्याख्यात्मक प्रश्न

व्याख्यात्मक प्रश्न वे होते हैं जिनका उद्देश्य यह जानकारी प्राप्त करना होता है कि किसी दिए गए संदर्भ/विषय वस्तु के संबंध में प्रस्तुत प्रत्यक्ष समझ/धारणा के अतिरिक्त, जिन से प्रश्न किया गया है, उनकी व्यक्तिगत समझ/धारणा क्या है? ऐसे प्रश्नो के उत्तर/व्याख्या व्यक्ति, व्यक्ति के अनुसार अलग अलग होती है।

उदाहरण – प्रश्न–: नर हो न निराश करो मन को, कुछ काम करों, कुछ काम करों। इससे कवि का क्या आशय है, व्याख्या कीजिए ?

ऐसे प्रश्नों के दो उद्देश्य होते है– 1. प्रस्तुत संदर्भ/विषय वस्तु के संबंध में प्रत्यक्ष/स्पष्ट जानकारी लेना 2. प्रस्तुत संदर्भ/विषय वस्तु पर उत्तर देने वाले का विचार/दृष्टिकोंण जानना । उपरोक्त प्रश्न का उत्तर होगा –1. मनुष्य हो, तो मन को निराश न करते हुए, काम करते रहना चाहिए। यह प्रस्तुत संदर्भ/विषय वस्तु के संबंध में स्पष्ट/सीधा जानकारी है। 2. जीवन में सुख और दुःख को समभाव से ग्रहण करते हुए सुख में ज्यादा प्रफुल्लित व दुःख में उदास नहीं होना चाहिए। अपने सम्मुख उपस्थित दुःख/कष्ट/कठिनाई/निराशा के पल को हम अपनी उद्यमशीलता से दूर कर सकते हैं। अर्थात् प्रत्येक परिस्थिति में कर्म ही जीवन का सार है। यह प्रस्तुत संदर्भ/विषय वस्तु के संबंध में व्यक्ति की, व्यक्तिगत समझ/धारणा की जानकारी दे रहा है।

वर्णनात्मक और व्याख्यात्मक प्रश्न में अंतर –: प्रायः इन दोनों प्रश्नों को एक ही मान कर उत्तर देने अथवा लिखने का प्रयास किया जाता है, किंतु इन दोनों मे मूलभूत अंतर है। वर्णनात्मक प्रश्न जहॉ प्रस्तुत किसी संदर्भ/विषय वस्तु के संबंध में हूबहू जानकारी की अपेक्षा रखता है, वही व्याख्यात्मक प्रश्न प्रस्तुत किसी संदर्भ/विषय–वस्तु के संबंध मे उत्तर देने वाले की व्यक्तिगत विचारों की प्रगटीकरण की अपेक्षा करता है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि यदि वर्णनात्मक प्रश्न शरीर है, तो व्याख्यात्मक प्रश्न आत्मा।

इससे लाभ –

1. बच्चें वर्णन करने और व्याख्या करने के अंतर को समझेंगे।
2. प्रस्तुत संदर्भ/विषय–वस्तु के संबंध में स्वयं का विचार/दृष्टिकोण विकसित होगा।
3. प्रश्नो का सहीं उत्तर देने में सक्षम होंगे।

क्रमशः

रघुवंश मिश्रा
बी0 आर0 पी0 कोटा

शिक्षा में नवाचार पार्ट 22
टिप्पणात्मक प्रश्न

जब भी कोई हम से प्रश्न पूछता है या हमें प्रश्नों का उत्तर लिखने को दिया जाता है, तब हम प्रश्नों का उत्तर देने या लिखने की शुरुआत थोड़ा पीछे की तथ्यों/घटनाओं का उल्लेख करते हुए थोड़ा आगे की तथ्यों या घटनाओं तक करते है। ऐसी परिस्थिति में प्रश्नों के उत्तर देने अथवा लिखने में उत्तर की विषय वस्तु अतिरिक्त रुप से बढ़ जाती है। इन अतिरिक्त तथ्यों/घटनाओं का उल्लेख न करते हुए जब हम दिये गए प्रश्न अथवा विषय वस्तु के मूलभूत/सार तथ्यों को जानने के लिये प्रश्न करते हैं, तब यह प्रश्न टिप्पणात्मक प्रश्न कहलाता है।

टिप्पणात्मक प्रश्नों की विशेषता –:

1. ऐसे प्रश्न सामान्य प्रश्नों की अपेक्षा आकार में छोटा या शीर्षक रुप में होता हैं।
2. इन प्रश्नों का आरंभ या इन प्रश्नों में प्रश्न सूचक शब्दो जैसे – क्या, कौन, कहॉ, कब इत्यादि का उपयोग नही होता ।
3. वर्णित विषय वस्तु मे से किसी विशेष बिन्दु को प्रश्न के रुप में हल करने को दिया जाता है ।
4. उत्तर संक्षिप्त में या सार प्रस्तुतीकरण के रुप मे दिया जाता है
5. ये सूचना व तर्क परक दोनों उद्देश्यों की पूर्ति के लिये पूछे/दिए जाते हैं।

उदाहरण –: बच्चों को मनुष्य के शरीर के आंतरिक संरचनाओ के संबंध में बतलाया गया। अब बच्चो से उन आंतरिक संरचनाओं से संबंधित आधारभूत तथ्यों की समझ की परख के लिये प्रश्न पूछा या लिखने को कहा जाता है तो ऐसे प्रश्न का स्वरुप होगा – टिप्पणी लिखों –1. हृदय 2. वृक्क।

बच्चें ऐसे प्रश्नों के उत्तर देते/लिखते समय अपना ध्यान केवल हृदय व वृक्क से संबंधित मूलभूत तथ्यों पर केन्द्रित करेगा, न उसके पीछे व आगे की तथ्यों पर ।

इससे लाभ –:

1. बच्चे सारगर्भित रुप से उत्तर देना सीखेगें।
2. आवश्यक व अनावश्यक तथ्यों की पहचान करने में सक्षम होगें ।
3. कम शब्दों में तर्क पूर्ण ढंग से अपनी बातों को प्रस्तुत करना जानेंगे।
4. महत्वपूर्ण बातों पर ध्यान केन्द्रित करने की प्रवृत्ति का विकास होगा।

क्रमश :

रघुवंश मिश्रा
बी0 आर0 पी0 कोटा

शिक्षा में नवाचार पार्ट 23
समीक्षात्मक प्रश्न

कोई भी पाठ एक से अधिक अनुच्छेदों से मिलकर बना होता है, और आरंभिक अनुच्छेद से लेकर अंतिम अनुच्छेद तक इनमे तारतम्यता अर्थात सम्बध्दता होती हैं। पाठ के पूर्ण हो जाने के बाद अंत में अभ्यास कार्य कें माध्यम से प्रत्येक अनुच्छेद के संबंध में कुछ कार्य बच्चों से कराने की अपेक्षा होती है, जो विभिन्न प्रकार के प्रश्नों के माध्यम से कराए जाते हैं। बच्चों से कराए जाने वाले यह कार्य पूर्ण रुप में न हो कर खंण्डित रुप में होता है अर्थात किसी एक प्रश्न के द्वारा ही सम्पूर्ण विषय वस्तु की समझ की परख न करके प्रश्नों के समूह द्वारा समझ को परखने का कार्य किया जाता हैं। किंतु जब किसी एक ही प्रश्न के द्वारा पूरे विषय वस्तु की सार की प्रस्तुतीकरण की अपेक्षा बच्चों से की जाए तो ऐसे प्रश्न समीक्षात्मक प्रश्न कहलाते हैं। इन प्रश्नों के द्वारा प्रश्नकर्ता दिए गए विषय वस्तु पर उत्तरदाता की समझ को सार रुप में परखने का कार्य करता है। ऐसे प्रश्नो का उत्तर देते समय उत्तरदाता न केवल विषय वस्तु की बातों की ध्यान में रखता है, अपितु उसी से संबंधित अपने व्यवहारिक अनुभवों का भी उपयोग करता हैं।

उदाहरण– कक्षा पॉचवीं के बच्चों को पंच परमेश्वर कहानी की सार समझ परखने के लिये प्रश्न दिया गया कि पंच परमेश्वर कहानी की समीक्षा कीजिए ? बच्चें इस प्रश्न का उत्तर देते समय न केवल कहानी में वर्णित प्रत्येंक घटना क्रम को सार रुप में रखेंगें अपितु ऐसे ही परिस्थिति में अपने व्यावहारिक जीवन में प्राप्त किये अनुभवों का भी उपयोग करेगें। बच्चें बतलायेगें की कैसे गरीब बुढ़िया को जायदाद के लालच में उसके रिश्तेदार द्वारा धोखा दिया जाता है और न्याय की आश में वह भटकती है किंतु न्याय करने वाले लोग पक्षपात से ग्रसित होते हैं। बच्चों को अपनी परिस्थिति में भी यही दिखलाई देता है जिसका उपयोग वे कहानी की समीक्षा करने में करेगें।

इससे लाभ –:

1. बच्चे सम्पूर्ण विषय वस्तु को ध्यान से ग्रहण करने का प्रयास करेंगे।
2. विषय वस्तु को सार रुप में प्रस्तुत करना सीखेंगे।
3. अपने व्यावहारिक अनुभवों को विषय वस्तु से जोड़ना या विषय वस्तु को अपने व्यवाहारिक अनुभवों से जोड़ना सीखेंगे।
4. प्रश्नों का उत्तर न केवल खण्डित रुप में अपितु पूर्ण रुप में देना जानेंगे।

क्रमश :

रघुवंश मिश्रा
बी0आर0पी0कोटा

शिक्षा में नवाचार – पार्ट 24
मूल्यांकनात्मक प्रश्न

प्रत्येक पाठ में बहुत से संदर्भ निहित होते है जो आपस में एक दूसरे से जुड़ कर पाठ को पूर्णता प्रदान करते हैं। पाठ में आए प्रत्येक संदर्भ महत्वपूर्ण होते हुए भी समान रुप से महत्वपूर्ण नही होते अर्थात् तुलनात्मक रुप से कोई संदर्भ ज्यादा महत्वपूर्ण होता है तो कोई कम। ऐसी परिस्थिति में जब दिए गए बहुत से संदर्भो मे से किसी एक संदर्भ पर बच्चों की समझ/विचार जानने हेतु प्रश्न किया जाता हैं वह मूल्यांकनात्मक प्रश्न कहलाता है। ऐसे प्रश्नों का उत्तर किसी विशेष संदर्भ के ही सम्पूर्ण बातों/तथ्यों को ध्यान मे रखकर दिया जाता है न कि पूरे संदर्भो को। संदर्भ से यहॉ आशय पात्र/परिस्थिति/तथ्यों से है जो किसी पाठ में दी गई हो।

उदाहरण – कक्षा पॉचवीं के बच्चो को पंच परमेश्वर पाठ पढ़ाया गया। यह पाठ कई संदर्भो से जुड़ते हुए पूर्णता को प्राप्त करता हैं। इन कई संदर्भो में से हम एक विशेष संदर्भ अलगू चौधरी के चरित्र के संबंध में बच्चो की समझ जानना चाहते हैं तो हमारा प्रश्न होगा – प्रस्तुत कहानी के आधार पर अलगू चौधरी के चरित्र का मूल्यांकन कीजिए? इस प्रश्न का उत्तर बच्चें केवल अलगू चौधरी के चरित्र को ध्यान में रखकर, जैसा कि कहानी में वर्णित हो, देगा।

समीक्षात्मक और मूल्यांकनात्मक प्रश्न में अंतर –: इन दोनों प्रकार के प्रश्नों में मूलभूत अंतर यह है कि समीक्षा जहॉ पूरे पाठ/विषय वस्तु की, की जाती हैं, वही मूल्यांकन पूरे पाठ/विषय वस्तु के एक अंश की। दूसरे शब्दों में कह सकते है कि समीक्षात्मक प्रश्न समूह/विषय निष्ठ होते हैं जबकि मूल्यांकनात्मक प्रश्न व्यक्ति/वस्तुनिष्ठ होते हैं।

इससे लाभ –:

1. बच्चे प्रत्येक पाठ/विषय वस्तु के प्रत्येक अंश को गंभीरता से समझने का प्रयास करेंगे।
2. अनेक महत्वपूर्ण तथ्यों/विचारों में से सबसे महत्वपूर्ण तथ्यों/विचारों को ग्रहण करेंगे।
3. पूछे गए प्रश्नों के उद्देश्य को ध्यान में रखकर उत्तर देना/लिखना जानेंगे।

क्रमशः

रघुवंश मिश्रा
बी0आर0 पी0 कोटा

शिक्षा में नवाचार – पार्ट 25
समानता/तुलना/अंतर से संबंधित प्रश्न

प्रत्येक कक्षा/विषय में अभ्यास कार्य के अंतर्गत समानता/तुलना व अंतर से संबंधित कुछ न कुछ प्रश्न अवश्य रखे जाते हैं। प्रश्नों के अभिप्राय को सहीं ढंग से नही समझ पाने के कारण बच्चे प्रश्नों के उत्तर देने/लिखने में त्रुटि करते हैं। बच्चे एसे प्रश्नों के उत्तर देने/लिखने में त्रुटि न करें, इसके लिये यह आवश्यक है कि उन्हें ऐसे प्रश्नों को हल करने का पर्याप्त अवसर शिक्षक के सही मार्गदर्शन में मिलें। सबसे पहले हम ऐसे प्रश्नों के स्वरुप की प्रकृति को अलग–अलग समझने का प्रयास करते हैं।

1. **समानता से संबंधित प्रश्न** – 1. पौधे व जंतु में क्या समानताएँ है?
   2 घोडे और गधे में क्या समनाताएँ है?
   3 रमा और श्यामा में क्या समानताएँ है?

1. समानता पर आधारित उपरोक्त प्रश्नों से निम्न तथ्य स्पष्ट होते है –

अ. समानता से संबंधित प्रश्न दो अलग अलग चीजों जैसें प्रश्न एक में पौधे और जंतु।

ब. एक समूह से संबंधित दो अलग–अलग चीजों/जीवों जैसे प्रश्न दो में घोड़े और गधे।

स. एक समूह संबंधित समान चीजों/जीवों जैसे प्रश्न तीन में रमा और श्यामा पर आधारित हो सकते हैं।

2. समानता से संबंधित प्रश्नों के उत्तर प्रश्न में दिये गए चीजों/तथ्यों के समरुप गुणों पर आधारित होते है। जैसे –प्रश्न एक में पौधे और जंतु के समरुप गुण–वृध्दि, भोजन, श्वसन, प्रश्न दो में घोड़े और गधे के समरुप गुण–भोजन, निवास, परिवहन क्षमता व प्रश्न तीन में रमा और श्यामा कें समरुप गुण–उचाई, रंग, बुध्दि, व्यवहार इत्यादि पर आधारित होगें।
3. समानता से संबंधित प्रश्नों के उत्तर समरुप गुणों के व्यापकता के आधार पर दिए जाते है, न कि सूक्ष्मता के। जैसे –प्रश्न एक में पौधे और जंतु के बीच पायें जाने वाले समरुप गुण–वृध्दि, भोजन, श्वसन इत्यादि का उल्लेख व्यापक अर्थ में किया जाता है, न कि सूक्ष्म अर्थो में।

2. **तुलना से संबंधित प्रश्न** –: 1. पौधे और जंतु का तुलनात्मक अध्ययन कीजिए?
   2. घोंडे और गधे में तुलना कीजिए?
   3 रमा और श्यामा के व्यवहार की तुलना कीजिए?

1. तुलना पर आधारित उपरोक्त प्रश्नों से निम्न तथ्य स्पष्ट होते हैं –

(अ) तुलना से संबंधित प्रश्न दो भिन्न चीजों/तथ्यों/वस्तुओं/जीवों जैसे प्रश्न एक में पौधे और जंतु।

(ब) एक ही समूह के चीजो/तथ्यों/वस्तुओं/जीवों जैसे प्रश्न दो में घोंड़े और गधे तथा

(स) एक ही समूह से संबंधित चिजो/तथ्यों/वस्तुओ/जीवों जैसे प्रश्न तीन में रमा और श्यामा पर, आधारित हो सकते है।

2. जब दो भिन्न चीजों/तथ्यों/वस्तुओं/जीवों की तुलना की जाए तो इसका आधार व्यापक स्वरुप गुण होते है किन्तु जब एक ही समूह के अलग–अलग चीजों/तथ्यों/वस्तुओं/जींवो तथा एक ही समूह के चीजों/तथ्यों/वस्तुओं/जीवों की तुलना करने को कहा जाए तो व्यापकता का आधार धीरे–धीरे या क्रमशः कम होते जाता है जैसा कि प्रश्न क्रमांक तीन में रमा और श्यामा के कवल व्यवहार की तुलना करने को कहा गया है।

अंतर सें संबंधित प्रश्न –: 1. पौधे और जंतु में क्या अंतर है ?
2 घोड़े और गधे में अंतर बताइये है ?
3 रमा और श्यामा के शारीरिक संरचता में क्या अंतर है ?

अंतर से संबंधित उपरोक्त प्रश्नो से निम्न तथ्य स्पष्ट होते है –:

1. अंतर से संबंधित पक्ष किन्ही दो चीजों/तथ्यों/वस्तुओं/जीवों पर आधारित होते है चाहे वह चीज/तथ्य/वस्तु/जीव दो भिन्न समूहों या एक ही समूह से संबंधित हो ।
2. अंतर जब समरुप गुणों पर आधारित हो तब वह सूक्ष्मता अभिभूख होता है । जैसे पौधे और जनतु के द्वारा भोजन ग्रहण की प्रक्रिया में क्या अंतर है? यह प्रश्न समरुप गुणों पर आधारित अंतर को सूक्ष्मता से प्रश्न समरुप गुणों पर आधरित अंतर को सूक्षमता से बतलाने की अपेक्षा करता/रखता है।
3. अंतर शब्द का सामान्य अभिप्रायः विपरीत अर्थ/भाव होता हैं। इसके अन्तर्गत किन्ही दो चीजों/तथ्यों/वस्तुओं/जीवों के समरुप गुणों में जो विपरित भाव होता है, के संबंध में जानकारी दी जाती है जैसे प्रश्न क्रमांक दो में घोड़े और गधे के बीच अंतर पूछा गया है। उत्तर देते समय इनके समरुप गुण चाल को लेते हुए कह सकते है कि घोड़ा तेज गति से दौड़ता है – गधे धीरे–धीरे। यहॉ समरुप गुणो मे स्थित विरित भाव को बतलाया जा रहा है।

इस प्रकार निष्कर्ष रुप में कह सकते है समानता, तुलना बौर अंतर सें संबंधित प्रश्नों के उत्तर देने/लिखने में व्यापकता से सूक्ष्मता की ओर प्रवेश करते है।

इससे लाभ –:

1. समानता,तुलना और अंतर जैसे शब्दों के अर्थ को समझेंगे।
2. इनसे संबंधित प्रश्नो के उत्तर देने/लिखने में त्रुटि नही करेंगे।
3. बच्चों के अनुभव व आत्मविश्वास में वृद्धि होगी।

क्रमशः

रघुवंश मिश्रा
बी0आर0 पी0 कोटा

शिक्षा मे नवाचार–पार्ट 26
प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रश्न

सामान्य रुप से प्रश्न पूछने के दो तरीके होते है– 1. व्यक्तिगत , 2. सामूहिक ।
प्रश्न पूछने के इन दोनो ही तरीको में प्रश्न पूछने वाले और उत्तर देने वाले के बीच सीधा–सीधा संबंध होता है। जैसे – कक्षा में शिक्षक द्वारा छात्रो से किया गया प्रश्न व्यक्तिगत और सामूहिक दोनो तरीको से किये गये/जाने वाले प्रश्न का अच्छा उदाहरण है क्योंकि कक्षा में शिक्षक छात्रो से व्यक्तिगत और सामूहिक दोनो ही रुपो मे प्रश्न करता है,किंतु जब छात्रो द्वारा पाठ्य पुस्तक में दिये गये प्रश्नो का उत्तर दिया जाता/लिखा जाता हैं तों यह प्रश्न पूछने के सामूहिक तरीके को बतलाता हैं,चाहें छात्र इन प्रश्नों का उत्तर व्यक्तिगत रुप से दे या सामूहिक रुप से दें। इन दोनो ही तरीको से पूछे जाने वाले प्रश्न की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह भी है कि यहॉ प्रश्न करे वाले(चाहे वह शिक्षक हो या पाठ्य पुस्तक) व उत्तर देने वाले दोनो कें बीच/मध्य पारस्परिक संबंध या आमने सामने का संबंध होता है। अतः इस ढंग से पूछे जाने वाले प्रश्न प्रत्यक्ष प्रश्न कहलाता है। जैसे – शिक्षक ने बच्चों को घमंडी कौआ पाठ पढ़ाते समय प्रश्न किया कि– कौआ कहॉ रहता था?,हंस कहॉ से आये थें?, इसी प्रकार पाठ पढ़ाने के बाद अभ्यास कार्य कराते हुए अंत में उल्लेखित प्रश्नों को पूछना कि – कौए हंसो को क्यों परेशान करते थे? कौए और हंस के बच्चे के बीच क्या शर्त लगी? इत्यादि।

कभी–कभी कुछ अन्य तरीको से भी प्रश्न पूछने और उत्तर देने का कार्य किया जाता है, जिसमें प्रश्न पूछने वाले व जिससे प्रश्न किया गया हो, कें बीच/मध्य पारस्परिक संबंध न होने के कारण ,किसी तीसरे पक्ष के द्वारा उत्तर दिया जाता है,तो ऐसे प्रश्न अप्रत्यक्ष प्रश्न कहलाता है। अप्रत्यक्ष प्रश्न प्रायः व्यक्तिगत होता है, न कि सामूहिक । इसमें प्रश्न करता किसी ऐसे व्यक्ति से प्रश्न पूछता है, जो उस संदर्भ/परिस्थिति में स्वयं उपस्थित नही होते और उत्तर प्राप्ति की अपेक्षा ऐसे व्यक्ति से की जाती है , जिसका अनुपस्थित व्यक्ति के साथ परस्पर संबंध हो। जैसे – शिक्षक ने कक्षा मे श्रमदान की योजना बनाई, कितु उस दिन कुछ छात्र उपस्थित नही थे। अगले दिन भी वे छात्र उपस्थित नही हुए। तब शिक्षक उन छत्रो के घनिष्ट मित्रो से प्रश्न करता है कि – राम से चर्चा करने पर उसने क्या कहा?, या मनोहर इस कार्य में सम्मिलित क्यो नही होना चाहता?, यह प्रश्न अप्रत्यक्षरुप से अनुपस्थित छात्रो से, प्रत्यक्ष रुप में उपस्थित छात्रो के माध्यम से किया जा रहा है और उपस्थित छात्रो द्वारा दिया गया उत्तर ही अनुपस्थित छात्रो का उत्तर माना जाता है।

इससे लाभ –

1. अपने व्यवहारिक जीवन में ऐसे प्रश्नों का उपयोग करना सीखेंगें।
2. ज्ञान प्राप्ति के अवसर का विस्तार होगा।
3. बच्चो के भाषाई कौशल समृध्द होगी।

क्रमशः

रघुवंश मिश्रा
बी0 आर0 पी0 कोटा

शिक्षा में नवाचार पार्ट 27

रचनात्मक/सृजनातम्क प्रश्न

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सृजनात्मकता का मूल आधार हैं। हमारे शालाओं में प्रचलित पाठ्यक्रमों में कक्षानुसार/विषयानुसार कुछ न कुछ प्रश्न ऐसे रखे जाते है, जिनसे बच्चों में अंतर्निहित सृजनात्मकता का विकास हो सके। अतः ऐसे सभी प्रश्न जो बच्चों मे अंतर्निहित सृजनातमक शक्ति को अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान करें, सृजनात्मक प्रश्न कहलाते है।

बच्चों में अतर्निहित सृजनात्मक शक्ति को अभिव्यक्त करने के अवसर दो तरह से दिये जा सकते है –

1. निर्देशित रुप में – छोटी कक्षाओं में बच्चों में सृजनात्कता के विकास हेतु निर्देशित कार्य दिये जाते है। ये कार्य किसी कहानी/कविता के कुछ अंशों का उल्लेख कर,कहानी/कविता के शेष अंशो को बच्चों से पूरा कराने के रुप में हो सकता है या किसी वस्तु/जानवर/मनुष्य/प्राकृतिक दृश्यों के चित्र या मूर्ति बनाने के रुप में हो सकता है। ज्यादातर बच्चे इन कार्यो को रुचि लेकर सक्रियता के साथ करते है।

2. स्वतंत्र रुप में – जैसे–जैसे कक्षाए बढ़ती जाए, वैसे–वैसे बच्चो में सृजनात्मकता विकास हेतु स्वतंत्र अवसर दिया जाना चाहिए। इसमें बच्चो से अपने अनुभव व कल्पना के आधार पर छोटी–छोटी कविता/कहानी/नाटक तथा चित्रों व मूर्ति बनाने का कार्य दिया जा सकता है। स्वतंत्र सृजनात्मक कार्य शाला के कुछ बच्चे ही करने में सक्षम होते है, किंतु इस अवसर की निरंतरता बनाऐ रखने से ज्यादा से ज्यादा बच्चों में छिपी सृजनात्मक शक्ति को बाहर ला सकते है।

इससे लाभ –:

1. शाला का वातावरण आकर्षक व रोचक होगा।
2. बच्चों को अपनी कल्पनाओं को साकार करने का अवसर मिलेगा।
3. बच्चे अपने आप को मौखिक व लिखित दोनो रुपों में, अभिव्यक्त करने में सक्षम बनेगें।
4. बच्चो के कार्यो का देखकर अन्य बच्चे भी कुछ करने के लिए प्रेरित होगे।
5. व्यक्तिगत गरिमा व सम्मान में वृध्दि होने से आत्मविश्वास बढ़ेगी।

क्रमश :

रघुवंश मिश्रा
बी0 आर0 पी0 कोटा

शिक्षा में नवाचार पार्ट 28
बाध्यतामूलक प्रश्न

कभी–कभी हमारें समक्ष ऐसे प्रश्न रखे जाते है ,जिनका उत्तर देना अनिवार्य होता हैं। ऐसे प्रश्नों का उत्तर न केवल हम अनिवार्य रुप से देते है, अपितु जैसा प्रश्न पूछने अथवा देने वाला चाहता है कि इस प्रश्न का उत्तर, जैसा मै चाहता हूँ, वैसा ही दिया जाए और हम वैसा ही उत्तर देते है ,तो ऐसे प्रश्न बाध्यतामूलक प्रश्न कहलाता है।

बाध्यतामूलक प्रश्न की विशेषताएँ –:

1. ऐसे प्रश्नों का उत्तर अनवार्य रुप से दिया जाता है ।
2. ऐसे प्रश्न व्यक्तिगत न किया जाकर , सामूहिक रुप से किया जाता है ।
3. समूह में से बहुमत का उत्तर सर्वमान्य माना जाता है।
4. बहुमत का उत्तर सकारात्मक/नकारात्मक हो , यह प्रश्न की विषय व्सतु पर निर्भर न करके प्रश्न पूछने वाले पर निर्भर करता है।
5. ऐसे प्रश्नो का उत्तर प्रायः हॉ या ना में दिया जाता है ।
6. ऐसे प्रश्नो का उपयोग किसी विषय वस्तु पर समूह का चिवार जानने के लिये किया जाता है।
7. उत्तर देने वाला अपना उत्तर अपने व्यक्तिगत धारणा/समझ के आधर पर न देकर , समूह के विचारो से प्रेरित होकर देता है, चाहे उसका व्यक्तिगत विचार अलग ही क्यों न हो।

उदाहरण–: कक्षा में शिक्षक द्वारा प्रश्न पूछा गया कि–क्या हमें सदैव सत्य बोलना चाहिए?

इस प्रश्न पर कक्षा के सभी बच्चो का उत्तर हॉ होगा। इसी प्रकार प्रश्न क्या हमें हरें पेड़ काटने चाहिए?,का उत्तर नही होगा। बच्चे ऐसे प्रश्नो का जवाब कक्षा के सामूहिक विचार से प्ररित होकर देते है, न कि अपने व्यक्तिगत विचार से ।

बाध्यतामूलक प्रश्न और हॉ या ना दोनो प्रकार के प्रश्नों के उत्तर हॉ या ना में ही दिये जाते है, कितुं इन दोनो प्रश्नो में मूलभूत अंतर यह है कि जहॉ बाध्यतामूलक प्रश्नो का उपयोग संदर्भित विषय वस्तु पर बहुमत का विचार जानने के लिये किया जाता है, वही हॉ या ना प्राकर के प्रश्नो का उपयोग व्यक्तिग समझ/धारणा/विचार जानने में किया जाता है।

इससे लाभ –

1. बच्चो में समय/परस्थिति/विषयवस्तु के अनुसार व्यक्तिगत धारणाओ को छोड़कर,समूह के अनुसार कार्य करने की प्रवृत्ति विकसीत होगी।
2. बहुमत का सम्मान करना सीखेगें।
3. विषय की व्यापक महत्ता का आदर करना सीखेंगें।

क्रमशः

रघुवंश मिश्रा
बी0 आर0 पी0 कोटा

शिक्षा में नवाचार–पार्ट 29

काल्पनिक प्रश्न

कल्पना सृजनात्मकता का आधार है। आज तक जितने भी वैज्ञानिक आविष्कार हुए है ,उन सबका आधार कल्पना ही है। हमारे पाठयक्रमों में प्रस्तुत पाठ्य वस्तु पर कुछ न कुछ काल्पनिक प्रश्न अवश्य रखे जाते है/रखे जाने चाहिए। ताकि बच्चो में कल्पनाशीलता के माध्यम से सृजनात्मकता का विकास हो सके/किया जा सके । पाठयक्रमो में रखे गए/आए काल्पनिक प्रश्नो का यदि हम गहराई से विश्लेषण करें तो यह पाते है कि ये काल्पनिक प्रश्न दो प्रकार के होते है –

1. सम्बध्द काल्पनिक प्रश्न –: प्रस्तुत पाठ्य वस्तु पर आधारित काल्पनिक प्रश्न सम्बघ्द काल्पनिक प्रश्न कहलाता है। उदा0 –बच्चों को घमण्डी कौआ पाठ पढ़ाया गया। इस कहानी में गंगा नदी के किनारे बरगद के पेड़ पर रहने वाले कौओं और वहॉ आकर विश्राम करने वाले हंसो में बहस होती है कि कौन तेज और ज्यादा समय तक उड़ सकता है। इस पर हंस का बच्चा कौआ के बीच उड़ान होती है और अंत में कौआ थक कर गिरने लगता है, जिसे हंस बचा लेता है और कौआं का घमध्ड चूर–चूर हो जाता है। इस कहानी पर प्रायः पाठ्य वस्तु के अंत मे कुछ काल्पनिक प्रश्न रखें जाते है जो कहानी अथवा विषय वस्तु से सम्बघ्द होते है। जैसे – 1. हसं कौआं को अपने पीठ पर नही बैठाता तो क्या होता?, 2. यदि कौआं जीत जाता तो क्या होता?

2. असम्बध्द काल्पनिक प्रश्न –: कुछ काल्पनिक प्रश्न ऐसे होते है, जो पाठय वस्तु से बिल्कुल भी संबंधित नही होते और प्रायः ऐसे काल्पनिक प्रश्नों का जवबा देने में बच्चे कठनाई महसूस करते है । असम्बघ्द काल्पनिक प्रश्न प्रस्तुत पाठ्य वस्तु का जो अर्थ होता है, उसके बिल्कुल विपरित होता है । उदाहरण – उपरोक्त कहानी में यदि कहानी के मूल अर्थ को पलट कर प्रश्न पूछा जाए तो यह असम्बघ्द काल्पनिक प्रश्न होगें। जैसे – 1. यदि बरगद पर हंस रहते तो कौआं वहॉ आकर विश्राम करते तब हंस क्या करते? 2. हंस और कौआं की उड़ान नदी के उपर न होकर तालाब के उपर होता तो क्या होता?,

काल्पनिक प्रश्नो का उपयोग कहॉ तक करें –:

1. समबघ्द काल्पनिक प्रश्नो का ही उपयोग करें।
2. जिस बिन्दु पर विषय वस्तु का अंत हो, काल्पनिक प्रश्न बिल्कुल उसके बाद की स्थिति के लिये करें।
3. असम्बध्द काल्पनिक प्रश्नो का उपयोग केवल मनोरंजन के लिये करें।
4. काल्पनिक प्रश्नो का उद्येश्य विषय वस्तु को बच्चों के व्यवहारिक जीवन से जोडते हुए रखें।

क्रमशः

रघुवंश मिश्रा
बी0 आर0 पी0 कोटा

शिक्षा में नवाचार–पार्ट 30
अनुमानित प्रश्न

हमारे पाठ्य पुसतको में कुछ प्रश्न ऐसे भी होते है, निका उद्येश्य यह देखना होता है कि बच्चे ने जो पढ़ा है/सीखा है, उसके आधार पर, वह उसी से संबंधित अन्य तथ्यों/अवधारणाओ का अपने व्याावहारिक जीवन में उपयोग करता है कि नही ।इसकी पुष्टि हेतु पूछे गए प्रश्न अनुमानित प्रश्न कहलाता है।

कुछ लोग काल्पनिक प्रश्न और अनुमानित प्रश्नो को एक ही मानकर, एक–दूसरे के स्थान पर उपयोग करते हैं। यदि हम इन दोनो प्रश्नों के स्वरुप पर गहराई से विचार करें तो पाते है कि काल्पनिक प्रश्न जहॉ विषय वस्तु की तुरत बाद की स्थिति पर पूछे जाते है, वही अनुमानित प्रश्न विषय वस्तु पर आधारित ऐसे प्रश्न होते है जिनका जवाब विषय वस्तु की वास्तविकता के आधार पर दिया जाता है।इसके अतिरिक्त काल्पनिक प्रश्न आगे क्या हो सकता है या होना चाहिए पर प्रकाश डालता है, वही अनुमानित प्रश्न पहले क्या हुआ और उस आधार पर आगे क्या हो सकता है,की स्थिति पर प्रकाश डालता है।

उदाहरण – जैसे हंस और कौऐं की कहानी में यदि हसं और कौऐं के बीच उड़ान बरगद के पेड़ के उपर होती तब क्या होता? ऐसा प्रश्न करने पर बच्चे का जवाब कहानी में वर्णित कौऐ के उड़ान क्षमता को ध्यान मे रखते हूए दिया जाता जो कि वास्तविकता के करीब होता। अतः ऐसे प्रश्नों को अनुमानित प्रश्न की श्रेणी में रखा जाता है।

इससे लाभ –:

1. बच्चें कल्पना और अनुामान के बीच अंतर को समझ पायेंगे।
2. दोनों प्रकार के प्रश्नों का अलग अलग ढंग से उत्तर देना सीखेंगें
3. स्वयं काल्पनिक और अनुमानित प्रश्न बनाकर पाठ्य वस्तु को गहराई से समझने का प्रयास करेगें।

क्रमशः

रघुवंश मिश्रा
बी0 आर0 पी0 कोटा

शिक्षा में नवाचार पार्ट 31
सम्भावित प्रश्न

हमारे आस–पास जो भी तथ्य/वस्तु/घटनाओ का जो अस्तित्व होता है,उनमें एक क्रमबध्दता पायी जाती है अर्थात तथ्यों/वस्तुओ/घटनाओ का स्वरुप एक निश्चित नियम के अनुसार आगे बढ़ता या परिवर्तित होता है। दूसरे शब्दों में कह सकते है कि आज हमारे समक्ष जो तथ्य/वस्तु/घटनाओ का स्वरुप जिस रुप में विद्यमान है,कल उसका स्वरुप क्या था और आने वाले समय में उसका स्वरुप क्या हो सकता है? अपवादों को छोड़कर ?,ये सभी एक निश्चित नियम के अनुसार संचालित होते है । इस प्राकर पूर्व में हुए बातों को ध्यान में रखकर, आगे क्या हो सकता हैं,पर प्रश्न किया जाऐ तो वह सम्भावित प्रश्न कहलाता है । जैसे घमण्डी कौआं कहानी में जो हुआ उसको ध्यान में रखकर प्रश्न किया जाए कि अगले साल हंसो के वहॉ आने पर क्या प्रतिक्रिया होगी? तो यह सम्भावित प्रश्न कहा जायेगा, क्योकि इसका जवाब कौओं कीइ प्राकृतिक स्वभाव के अनुसार दिया जायेगा कि कौऐं हंसो के आराम करने की स्थिति में पुनः पहली वाली घटनाओ की पुनरावृत्ति करेंगे अर्थात कांव–कांा कर हंसो को परेशान करेगे।

सम्भावित प्रश्न, अनुमानित प्रश्नों इस अर्थ में अलग है कि सम्भावित प्रश्न जहॉ पूर्णतः वास्तविकता पर आधारित होता है और इसका जवाब भी पूर्णतः वास्तविकता पर निर्भर करता है, वही अनुमानित प्रश्न वास्तविकता के करीब होता है, न कि वास्तविक। इस प्राकर कालपिनक, अनुमानित और सम्भावित प्रश्न स्वरुप में भले ही एक जैसा लगे किंतु अर्थ अर्थात् जवाब दिये जाने/लिखने के ढंग व होने वाले उद्येश्यों की पूर्ति की दृष्टि से अलग–अलग होते है। इन तीनो प्रकार के प्रश्नो में जो अंतर होता है , उसे पर्यावरण पर आधारित उदाहरण से समझने का प्रयास करते है –

1. काल्पनिक प्रश्न –: यदि पृथ्वी का तापमान 60 डिग्री सेंटीग्रेड तक हो जाए तब क्या होगा?
2. अनुमानित प्रश्न –: यदि पृथ्वी का तापमान इसी दर से बढ़ती रहें तो आने वाले समय में क्या हो सकता है?
3. सम्भावित प्रश्न –: इस वर्ष पृथ्वी का अधिकतम तापमान 45 डिग्री सेंटीग्रेड रिकार्ड किया गया, तो अगले साल पृथ्वी का अधिकतम तापमान क्या होगा?

इससे लाभ –:

1. बच्चों में तर्क क्षमता का विकास होगा।
2. घटनाओ के परस्पर संबंध को समझ सकेगे।
3. परिस्थिति का विश्लेषण करना सीखेगें।

क्रमशः

रघुवंश मिश्रा
बी0 आर0 पी0 कोटा

शिक्षा में नवाचार – पार्ट 32

निरर्थक प्रश्न

प्रश्नों के इस रोचक संसार में क्या कोई प्रश्न निरर्थक भी हो सकता है ? जी हॉ ! हम अपने व्यवहारिक जीवन में ऐसी परिस्थिति कई अवसरो पर देखते है, जब प्रश्न करने वाले को प्रश्न का कोई औचित्य नही होता और यह इस बात से भी सिद्ध हो तो है कि प्रायः ऐसे प्रश्नों का कोई उत्तर नही मिलता । हम अपने इस लेख के माध्यम से जान चुकें है कि प्रत्येक प्रश्न का कोई न कोई उद्धेश्य अवश्य होता है, और यदि उद्धेश्य ही न हो तो प्रश्न, प्रश्न नही होता । अतः प्रश्नों के सार्थक होने के लिए उद्धेश्य का होना आवश्यक है और जो प्रश्न उद्धेश्यहीन हो वह निरर्थक प्रश्न ही कहा जायेगा ।

उदाहरण :– कक्षा में शिक्ष्क बच्चों को जंगली जीवों के बारे में बतला रहा है कि कैसे ये जगली जीव खतरनाक होते है और अकेले मनुष्य को मार सकता है । बतलाते–बतलाते शिक्षक बच्चों से प्रश्न करता है कि क्या तुम जंगल में अकेले जाओंगे ? ऐसे प्रश्नों का उत्तर दो तरह से दिया जाता है – 1) या तो सभी बच्चे चुप रहेगें 2) या सभी बच्चे नही बोलेगें । बच्चों के द्वारा दिये जाने वाले इन दोनों तरह के उत्तर का कारण यह है कि शिक्षक ने अपने चर्चा के दौरान ही अपने द्वारा किये गये प्रश्नों के उत्तर बच्चों को बतला दिया है । उत्तर बतलाते हुए, उसी उत्तर पर आधारित प्रश्न करना निरर्थक प्रश्न कहलाता है, क्योंकि ऐसे प्रश्न न तो बच्चों में उत्सुकता/जिज्ञासा उत्पन्न करती है और न ही किसी उद्धेश्य की पूर्ति ।

इससे लाभ –

1. बच्चे सार्थक और निरर्थक प्रश्नों को समझेगें ।
2. अपने व्यवहारिक जीवन में निरर्थक प्रश्नों का उपयोग करने से बचेगें ।
3. निरर्थक प्रश्न भटकाव/भ्रम की स्थिति उत्पन्न करता है, बच्चे इसे समझते हुए भटकाव/भ्रम से बचेगें ।

क्रमशः

रघुवंश मिश्रा
बी.आर.पी. कोटा

शिक्षा में नवाचार – पार्ट 33
प्रश्न सूचक शब्द और शब्दरूप

जितने भी शब्द होते है वे सभी 8 शब्दरूपों/शब्द भेदों में से किसी न किसी से संबधित होते है । प्रश्नसूचक शब्द भी अपने शब्द प्रकृति अर्थात प्रश्न निर्माण में प्रयुक्त व प्रदर्शित अर्थ/भाव के अनुसार शब्दरूप में स्थान ग्रहण करता है । जैसेः– यह क्या है ? गिलास । इस वाक्य में क्या किसी वस्तु के नाम जानने के लिए प्रयुक्त किया गया है । हम यह भी जानते है कि किसी वस्तु/स्थान/जीवों के नाम संज्ञा कहलाता है, तथा उसके स्थान पर प्रयुक्त शब्द सर्वनाम। अतः उपरोक्त प्रश्न में ''क्या'' संज्ञा अर्थात गिलास के स्थान पर प्रयुक्त हुआ है । अतः क्या प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाता है । इसी प्रकार कौन, किसका, किसे इत्यादि प्रश्नसूचक शब्द भी प्रश्नवाचक सर्वनाम की श्रेणी में आते है ।

जब ये प्रश्नसूचक शब्द किसी संज्ञा के पहले प्रयुक्त होकर, प्रश्न निर्माण का कार्य करें, तब ये प्रश्नसूचक शब्द प्रश्नवाचक विशेषण कहलाते है । जैसेः– 1) यह किसका सायकल है ? 2) तुम कौन सी पुस्तक पसंद करते हो ? इस उदाहरण में प्रयुक्त प्रश्नसूचक शब्द किसका, कौन सा, संज्ञा– सायकल और पुस्तक के ठीक पहले प्रयुक्त हुआ है । अतः ये प्रश्नवाचक विशेषण की तरह कार्य करते है।

ऐसे प्रश्न सूचक शब्द जो प्रश्न निर्माण में क्रिया की विशेषता बतलाये, प्रश्नवाचक क्रिया विशेषण कहलाते है। जैसेः– 1) रमन कहां है ? 2) तुम कब सोते हो ? 3) तुम ऐसा क्यों करते हो ? तुम कैसे जाओगे ? उदाहरण क्रमांक 1 में प्रयुक्त प्रश्नसूचक शब्द ''कहां '' रमन के होने (क्रिया), 2 में ''कब '' सोने (क्रिया), 3 में '' क्यो'' करना (क्रिया), 4 में '' कैसे'' जाना(क्रिया) की विशेषता बतलाने के लिए प्रयुक्त हुआ है । अतः ये सभी प्रश्नसूचक शब्द प्रश्नवाचक क्रिया विशेषण की तरह कार्य कर रहे है ।

<u>इससे लाभ</u> :–

1. बच्चे शब्दरूप और उसके अंतर्गत प्रयुक्त प्रश्नसूचक शब्द की स्थिति के अनुसार पहचान करना सीखेंगे ।
2. शब्दरूप के अंतर्गत प्रयुक्त प्रश्नसूचक शब्द की पहचान कर उत्तर देना सीखेंगे ।
3. प्रश्नसचक शब्दों को संदर्भ व परिस्थिति के अनुसार प्रयोग करना सीखेंगें ।

क्रमशः

रघुवंश मिश्रा
बी.आर.पी. कोटा

शिक्षा में नवाचार – पार्ट 34
प्रश्नसूचक शब्द और उसके बहुवचन

प्रश्न पूछने का उद्धेश्य जानकारी प्राप्त करना होता है । यह जानकारी सूचनात्मक और तर्कात्मक/विश्लेषणात्मक/वर्णनात्मक दोनों तरह की हो सकती है । प्रश्नों के उद्धेश्य के अनुरूप प्रश्नों के स्वरूप भी अलग–अलग होते है और प्रश्नों का यह स्वरूप जानकारी प्राप्त करने के आधार पर निर्भर करता है अर्थात यदि हम प्रश्नों के माध्यम से एक या संक्षिप्त जानकारी तथा संक्षिप्त विश्लेषण या वर्णन जानना चाहते है तो वहा प्रश्नसूचक शब्दों का उपयोग एक वचन के रूप में होता है, किन्तु यदि हम प्रश्नों के द्वारा अधिक जानकारी तथा व्यापक विश्लेषण या वर्णन की अपेक्षा रखते है, तो वहां प्रश्नसूचक शब्दों का उपयोग बहुवचन के रूप में किया जाता है । सामान्य रूप से शब्दों के बहुवचन बनाने के लिए मात्राओं में परिवर्तन किया जाता है किन्तु प्रश्नसूचक शब्दों के साथ–साथ उसी शब्द की पुनरावृत्ति द्वारा भी बहुवचन बनायी जाती है ।

जैसे :– प्रश्नसूचक शब्द	एकवचन	बहुवचन
क्या	क्या	क्या–क्या
कौन	कौन	कौन–कौन
कहां	कहां	कहां–कहां
कब	कब	कब–कब
किसका	किसका	किसका–किसका
कितना	कितना	कितना–कितना
कैसे	कैसे	कैसे
क्यों	क्यों	क्यों

जैसा कहा गया है कि इन प्रश्नसूचक शब्दों का उपयोग हमारे प्रश्न करने के उद्धेश्य पर निर्भर करता है। जैसे :–

प्रश्नों के स्वरूप	जानकारी प्राप्त करने के उद्धेश्य
1. तुम्हे खाने में क्या पसंद है ?	सबसे ज्यादा पसंद ।
2. तुम खाने में क्या–क्या पसंद करते हो ?	सबसे ज्यादा से घटते क्रम में ।
3. मेरे साथ कौन आयेगा ?	समूह में से कोई एक ।
4. मेरे साथ कौन–कौन आयेगा	एक से ज्यादा किन्तु सब नही ।
5. मछली कहां पायी जाती है ?	जल का कोई एक स्त्रोत ।
6. मछली कहां कहां पायी जाती है ?	जल के सभी स्त्रोत ।
7. तुम खाना कब खाते हो ?	एक बार खाने का समय ।
8. तुम खाना कब–कब खाते हो ?	जितने बार खाया जाय सबका समय।
9. यह किसका पेन है ?	एक व्यक्ति ।
10. यहां किसका–किसका समान रखा हुआ है ?	एक से अधिक व्यक्ति ।
11. तुम्हारे घर से स्कूल कितना दूर है ?	अनुमानित/निश्चित दूरी ।

12. रामू के पास 24 सेब है और उसे तीन लड़कों में कितना–कितना बांटना है ?	एक से ज्यादा में वितरण।
13. तुम यह काम कैसे करोगें ?	काम करने का मुख्य ढंग ।
14. वृक्षों को कटने से कैसे बचा सकते है ?	एक से अधिक उपाय।
15. तुम आज स्कूल क्यों नही गये ?	उस दिन स्कूल नही जाने का कारण ।
16. तुम स्कूल क्यों नही जाते ?	स्कूल नही जाने के एक से अधिक कारण ।

उपरोक्त उदाहरण के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि जानकारी प्राप्त करने के उद्धेश्यों के अनुरूप प्रश्नसूचक श्ब्दों का एक या बहुवचन के रूप में उपयोग किया जाता है, किन्तु कैसे और क्यों ऐसे प्रश्नसूचक शब्द है जिनका बहुवचन न तो शब्दों में मात्राओं के परिवर्तन और नही पुनरावुत्ति द्वारा बनायी जाती है । इन प्रश्नसूचक शब्दों का बहुबचन के रूप में उपयोग प्रश्नकर्ता के परिस्थति व संदर्भ पर निर्भर करता है ।

इसे क्यों जानें :–

1. सही ढंग से प्रश्न कर सकें अर्थात प्रश्न उद्धेश्यों के अनुरूप हो ।
2. बच्चे सही ढंग से जवाब देना व लिखना सीखें अर्थात प्रश्नों के उद्धेश्यों के अनुरूप ही जवाब दे या लिखे ।
3. परिस्थिति व संदर्भ के अनुसार प्रश्नसूचक शब्दों उपयोग करने में दक्ष हो सकें ।

क्रमशः

रघुवंश मिश्रा
बी.आर.पी. कोटा

शिक्षा में नवाचार – पार्ट 35
प्रश्नसूचक शब्द और प्रिन्ट रीच एनवायर्नमेंट

विगत सत्र से हमारे प्रदेश के सभी शालाओं में '' प्रिन्ट रीच एनवायर्नमेंट'' बनाने का कार्य किया गया है । इसके अंतर्गत बच्चों के शालेय परिवेश से संबधित सभी वस्तुओं के नाम हिन्दी, अंग्रेजी व क्षेत्र विशेष की स्थानीय भाषाओं में लिखे जाते है । इसका प्रमुख उद्धेश्य बच्चों में पठन कौशल का विकास करना है । प्रिन्ट रीच एनवायर्नमेंट में प्रश्नसूचक शब्दों को भी सम्मिलित कर, बच्चों को प्रश्न पूछने की क्षमता विकास के लिए पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराये जा सकते है। इसके लिए शाला भवन के ऐसे स्थान का चयन किया जाना चाहिये जहां बच्चों की नजर बार–बार जाए।

प्रश्नसूचक शब्दों के प्रिन्ट रीच एनवायर्नमेंट सभी प्रश्नसूचक शब्दों को हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत व क्षेत्र विशेष की स्थानीय भाषा में बड़े व स्पष्ट अक्षरों में लिखा जाना उपयुक्त होगा । यह कार्य हम बच्चों के कक्षा को ध्यान में रखकर कर सकते है अर्थात प्राथमिक स्तर पर हिन्दी, अंग्रेजी व स्थानीय भाषा के प्रश्नसूचक शब्द और उच्च प्राथमिक स्तर पर हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत व स्थानीय भाषा के प्रश्नसूचक शब्द ।

प्रश्नसूचक शब्द	हिन्दी	अंग्रेजी	संस्कृत	स्थानीय भाषा
क्या	क्या	What	किम्	का
कौन	कौन	Who	कः	कोन
कहां	कहां	Where	कुत्र	कोन मेर
कब	कब	When	कदा	कतका बेर
किसका	किसका	Whom/whose	कस्य / कस्या	काखर
कितना	कितना	How many/ Much	कतिः	कतेक / कतका
कैसे	कैसे	How	कथम्	कईसे
क्यों	क्यों	Why	कथम्	काहे / काहेबर

इससे लाभ :–

1. बच्चे मन में उत्पन्न जिज्ञासाओं की पूर्ति सरलता से कर सकेंगे ।
2. बच्चे एक से अधिक भाषाओं में प्रश्नसूचक शब्दों का उपयोग कर प्रश्न बनाना व करना सीखेंगे।
3. बच्चों के शब्द भण्डार में वृद्धि होगी ।

क्रमशः

रघुवंश मिश्रा
बी.आर.पी. कोटा

शिक्षा में नवाचार – पार्ट 36
प्रिन्ट रीच एनवायर्नमेंट में प्रश्नों का उपयोग

प्रश्नों के उपयोग का हमारे जीवन में सर्वोपरि स्थान है। हर ज्ञान व अनुभव हम प्रश्नों के द्वारा ही प्राप्त करते है, चाहें प्रश्नों की अभिव्यक्ति हमारे द्वारा प्रत्यक्ष रूप से की गई हो या न की गई हो। प्रिन्ट रीच एनवायर्नमेंट के अंतर्गत प्रश्न सूचक शब्दों के प्र्याप्त अभ्यास के बाद, इन प्रश्न सूचक शब्दों से बनें प्रश्नों का भी अभ्यास कराया जाना चाहिए, ताकि बच्चे अपने परिवेश में प्रचलित सभी भाषाओं में प्रश्न करने व एक भाषा के प्रश्न को दूसरे भाषा के प्रश्नों में परिवर्तित करते हुए अपने जिज्ञासाओं की पूर्ति करने में सक्षम हो सकें । इसके लिए प्रत्येक शाला में प्रिन्ट रीच एनवायर्नमेंट के तहत दीवारों पर प्रश्नों का प्रदर्शन किया जा सकता है ।

प्रिन्ट रीच एनवायर्नमेंट हेतु प्रश्न चार्ट

प्रश्नसूचक शब्द	स्थानीय भाषा	हिन्दी	अंग्रेजी	संस्कृत
क्या	ये का ए ?	यह क्या है ?	What is this ?	इदम् किं अस्ति ?
कौन	ओ हर कोन ए ?	वह कौन है ?	Who is he/she ?	सः कः अस्ति ?
कहां	तै कहां पढ़थस ?	तुम कहां पढ़ते हो ?	Where do you read ?	त्वम् कुत्र पठसि ?
कब	तै बाजार कब जाबे?	तुम बाजार कब जाओगे?	When will you go market?	कदा भवान निपणिं चलिस्यति ?
किसका	तै काखर बेटा अस ?	तुम किसके पुत्र हो ?	whom are you son ?	त्वम् कस्य पुत्रः ?
कितना	इहा कतका लईका पढ़त हे ?	यहां कितने बच्चे पढ़ते है ?	How many children do read hear ?	अत्र कति बालकाः पठन्ति ?
कैसे	तै कइसे पढ़थस	तुम कैसे पढ़ते हो ?	How do you read ?	त्वं कथम् पठति ?
क्यों	तै काहे हॉस थस	तुम क्यों हंसते हो	Why do you laugh ?	त्वं कथम् हससि ?

इससे लाभ–

1. बच्चे अपने परिवेश व शाला में प्रचलित भाषाओं में प्रश्न बनाना सीखेंगे।
2. एक भाषा के प्रश्न को दूसरे भाषा के प्रश्नों में रूपान्तरित करना जानेगे।
3. बच्चे आपस में खेल खेल में प्रश्न बनाने का अभ्यास करेंगे।
4. प्रश्नो के अभ्यास से उत्तर देने/ लिखने में दक्ष होगें।

क्रमशः

रघुवंश मिश्रा
बी.आर.पी. कोटा

शिक्षा में नवाचार – पार्ट 37
श्रुति लेख और प्रश्न निर्माण

प्रायः सभी शालाओं में प्रतिदिन कुछ समय श्रुति लेख का कार्य कराया जाता है । श्रुति लेख का मुख्य उद्धेश्य जहां एक ओर बच्चों में ध्यान से सुनकर व समझकर लिखने की दक्षता विकसित करना होता है, वही दुसरी ओर इससे बच्चों द्वारा किये जाने वाले भाषागत त्रुटियों को कम करते हुए अक्षर सुधारने का कार्य भी किया जाता है । श्रुति लेख का यह कार्य शिक्षक व बच्चों दोनों के द्वारा कराया जाता है अर्थात कभी शिक्षक बोलकर बच्चों लिखने के लिए कहता है तो कभी बच्चे ही बोलकर यह कार्य कराते है ।

श्रुति लेख का उपयोग हम बोले गये विषयवस्तु पर प्रश्न निर्माण के अभ्यास में भी कर सकते है । इसके लिए पाठ्यपुस्कों में दिए गये किसी अनुच्छेद के अतिरिक्त स्वतंत्र अनुच्छेद का उपयोग कर सकते है । स्वतंत्र अनुच्छेदों के श्रुति लेख के माध्यम से प्रश्न निर्माण के अभ्यास हेतु शिक्षक ऐसे अनुच्छेद का उपयोग करें, जिसमें सभी प्रश्न सूचक शब्दों का उपयोग करते हुए बच्चे छोटे व सरल प्रश्न बना सकें । उदाहरण :– रामगोपाल बसंतपुर का डाकिया था । वह प्रतिदिन सुबह 10 बजे सायकल से डाक बांटने निकल जाता था। बसंतपुर से लगभग 20 कि.मी. के क्षेत्र में पड़ने वाले सभी गांवों में वह ही डाक बांटने का कार्य करता था । इस कारण घर लौटने में उसे प्रतिदिन देर हो जाती थी ।

प्रस्तुत अनुच्छेद पर बच्चे प्रश्न बना सकते है –

1. रामगोपाल कौन था ?
2. रामगोपाल कहां का रहने वाला था ?
3. रामगोपाल प्रतिदिन क्या बांटने जाता था ?
4. वह डाक बांटने कैसे जाता था ?
5. वह डाक बांटने कब जाता था ?
6. उसे प्रतिदिन कितने कि.मी. डाक बांटने जाना पड़ता था ?
7. उसे घर आने में देर क्यों हो जाती थी ?

इससे लाभ :–

1. बच्चे पाठ्य वस्तु में दिये गये संदर्भो के अनुसार प्रश्न बनाना सीखेगें ।
2. प्रश्न बनाने के इस अनुभव का अपने व्यवहारिक जीवन में उपयोग करेगें ।
3. पाठ्य वस्तु/अनुच्छेदों पर सही प्रश्न निर्माण कर, प्रश्नों के सही उत्तर देना सीखेंगे ।
4. प्रश्न सूचक शब्दों के उपयोग करने में परिपक्व होगें ।
5. छोटे से छोटे अनुच्छेदों में अधिक से अधिक प्रश्न बनाना सीखेंगे ।
6. अपठित गंद्याशों के प्रश्न हल करना जानेगें ।

क्रमशः

रघुवंश मिश्रा
बी.आर.पी. कोटा

शिक्षा में नवाचार – पार्ट 38

प्रश्नावली

प्रश्नों का एक ऐसा समूह जिसके द्वारा किसी व्यक्ति अथवा समूह के सम्बंध में सामान्य अथवा विशेष जानकारी प्राप्त की जाए, प्रश्नावली कहलाता है। इस परिभाषा के आधार पर प्रश्नावली के संबंध में कुछ तथ्य स्पष्ट होते हैं–

1. प्रश्नावली प्रश्नों का समूह है – प्रश्नावली में पांच से ज्यादा प्रश्न रखें जाते है । कभी–कभी इनकी संख्या 100 तक भी होती है ।
2. प्रश्नावली व्यक्तिगत अथवा सामूहिक होती है – प्रश्नावली के अंतर्गत पूछे गये प्रश्नों का संबध किसी एक व्यक्ति अथवा समूह से संबधित हो सकती है ।
3. प्रश्नावली सामन्य या विशेष प्रकार की होती है – प्रश्नवली के अंतर्गत पूछे गये प्रश्नों का संबंध किसी व्यक्ति अथवा समूह के संबंध में सामान्य जानकारी अथवा विशेष जानकारी प्राप्त करने से संबंधित होती है ।
4. प्रश्नावली उद्धेश्यपूर्ण होते है– किसी व्यक्ति अथवा समूह के संबंध में किसी संदर्भित विषय के बारे में निष्कर्षात्क जानकारी प्राप्त करना प्रमुख उद्धेश्य होता है ।
5. योजना बनाने में उपयोगी – प्रश्नावली के माध्यम से प्राप्त जानकारी का विश्लेषण कर संबंधित व्यक्ति अथवा समूह के प्रर्दशन को और कैसे बेहतर बनाया जा सकता है, इस पर उपयोगी योजना बनायी जाती है ।

व्यक्तिगत प्रश्नावली

जब प्रश्नावली का उद्धेश्य किसी व्यक्ति विशेष के संबंध में जानकारी प्राप्त करना हो, तो वह व्यक्तिगत प्रश्नावली कहलाता है। उदाहरण– प्राथमिक शाला रामपुर के छात्र अवधबिहारी प्रतिदिन शाला देर से आता है। शिक्षक केवल उस छात्र के संबंध में देर से आने का कारण जानना चाहता है। अपने इस उद्धेश्य की पूर्ति के लिए वह छात्र से पूछे जाने वाले 10 प्रश्नों का प्रश्नावली तैयार करता है।

प्रश्न 1. छात्र का नाम
उत्तर– अवधबिहारी
प्रश्न 2. शाला से तुम्हारे घर की दूरी कितनी है ?
उत्तर – लगभग 500 मी.।
प्रश्न 3. तुम सोकर कब उठते हो ?
उत्तर– प्रातः 7 बजे।
प्रश्न 4. तुम शाला आने के लिए घर से कब निकलते हो ?
उत्तर – प्रातः 10 बजे।
प्रश्न 5. तम्हारे माता पिता क्या काम करते है ?
उत्तर– खेती किसानी।
प्रश्न 6. तुम शाला आने के पूर्व क्या–क्या काम करते हो ?
उत्तर– खेलना और पढ़ना।
प्रश्न 7. तुम्हारे कक्षा में प्रथम कालखण्ड में क्या विषय पढ़ाया जाता है ?
उत्तर – गणित।
प्रश्न 8. तुम्हे कौन सा विषय सबसे अधिक पसंद है ?
उत्तर– पर्यावरण।
प्रश्न 9. शाला आने के समय क्या तुम अपने मित्रों के घर जाते हो ?
उत्तर – नही।
प्रश्न 10. क्या तुम शाला खेलते हुए आते हो ?
उत्तर– नही ।

उपरोक्त प्रश्नावली के आधार पर छात्र से जो जानकारी प्राप्त हुई है, उसका विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि छात्र के शाला देर से आने का मुख्य कारण गणित विषय में उस छात्र का रूचि न होना है । रूचि न होने के कारण छात्र अपनी गतिविधियों को इस ढंग से नियोजित करता है कि वह प्रतिदिन प्रथम कालखण्ड के बाद ही शाला पहुचें। छात्र के संबंध में इस जानकारी के आधार पर शिक्षक द्वारा उस छात्र के प्रतिदिन नियमित समय पर उपस्थिति हेतु निम्न बिन्दुओं पर योजना बनायी जा सकती है–

1. छात्र से व्यक्तिगत चर्चा कर जानना कि उसे गणित में रूचि क्यो नही है ?
2. गणित विषय के अध्यपन को कैसे सरल और रोचक ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है?
3. अन्य कमजोर छात्रों के प्रर्दशन व उपस्थिति बतलाकर किस प्रकार बच्चे को प्रोत्साहित किया जा सकता है?
4. पालको से संपर्क कर, घर में गणित विषय की शिक्षण की अतिरिक्त व्यवस्था किस प्रकार की जा सकती है ?
5. बच्चे से प्रेमपूर्ण व्यवहार कर गणित विषय में किस प्रकार रूचि उत्पन्न की जा सकती है ?

रघुवंश मिश्रा
बी.आर.पी. कोटा

क्रमशः

शिक्षा में नवाचार – पार्ट 39
सामूहिक प्रश्नावली

जब प्रश्नावली का उद्धेश्य किसी समूह या संगठन के संबंध में विस्त्रृत जानकारी प्राप्त करना हो, तब इस कार्य के लिए प्रयुक्त प्रश्नावली सामूहिक प्रश्नावली कहलाता है ।

उदाहरण– प्राथमिक शाला रामपुर के कक्षा पांचवी में अध्ययनरत बच्चों की विषयवार रूचि व प्रर्दशन की जानकारी प्राप्त करने हेतु शिक्षक द्वारा 10 प्रश्नों की प्रश्नावली तैयार की गयी, जो इस प्रकार है –

प्रश्न 1. कक्षा पांचवी में कुल कितने छात्र दर्ज है ?
उत्तर– 25 ।
प्रश्न 2. कक्षा में प्रतिदिन बच्चों की औसत उपस्थिति कितनी होती है ?
उत्तर – 22 ।
प्रश्न 3. पर्यावरण में कितने छात्रों का प्रर्दशन अच्छा है ?
उत्तर– 17 ।
प्रश्न 4. पर्यावरण में छात्रों के अच्छे प्रर्दशन का क्या कारण है ?
उत्तर – शिक्षक द्वारा नियमित रूप से पाठ्य वस्तु को शिक्षण सामाग्री का उपयोग कर रोचक ढंग से पढ़ाना ।
प्रश्न 5. किस विषय में छात्रों का प्रदर्शन अच्छा नही है ?
उत्तर– अंग्रेजी और गणित ।
प्रश्न 6. छात्रों का सबसे खराब प्रर्दशन किस विषय में है ?
उत्तर– अंग्रेजी ।
प्रश्न 7. अंग्रेजी विषय में छात्रों के खराब प्रर्दशन का क्या कारण है ?
उत्तर – शाला के बाहर अंग्रेजी सिखने का अवसर उपलब्ध न होना ।
प्रश्न 8. विषयवार अच्छे व खराब प्रर्दशन करने वाले छात्रों के सिखने में पालको की क्या भूमिका है ?
उत्तर– पालको का बच्चों के अध्ययन में रूचि लेना सिखने की प्रक्रिया को गुणत्मक रूप से प्रभावित करता है ।
प्रश्न 9. छात्रों के प्रर्दशन को नियमित उपस्थिति किस प्रकार प्रभावित करती है ?
उत्तर – नियमित उपस्थिति छात्रों में सिखने को क्रमबद्ध बनाती है, जबकि अनियमित उपस्थिति क्रमबद्धता में अवरोध उत्पन्न कर सिखने की प्रक्रिया को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है ।
प्रश्न 10. छात्रों के प्रर्दशन में शिक्षकों की क्या भूमिका है ?
उत्तर– नियमित व शिक्षण सामाग्री की सहायता से रोचक अध्यापन बच्चों में रूचि उत्पन्न करने में सहायक होता है ।

उपरोक्त सामूहिक प्रश्नावली से संस्थाप्रमुख यह निष्कर्ष निकाल सकता है कि बच्चों के कक्षावार/विषयवार प्रर्दशन में नियमित उपस्थिति, शिक्षण सामाग्री का उपयोग व पालकों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है । इसके आधार पर योजना बनाकर कमियो को दूर करने का प्रयास किया जा सकता है ।

इससे लाभ :–

1. कक्षा के सभी बच्चों के संबंध में जानकारी प्राप्त की जा सकती है।
2. कमियों का ज्ञान होता है।
3. कमियों को दूर करने के लिए योजना बनायी जा सकती है।
4. कमियो के लिए जिम्मेदार व्यक्ति अथवा कारणों की पहचान होती है।
5. कमी दूर करने हेतु जिम्मेदारियों का निर्धारण करने में सरलता होती है।

रघुवंश मिश्रा
बी.आर.पी. कोटा

क्रमशः

शिक्षा में नवाचार – पार्ट 40

प्रश्न एक उत्तर अनेक

कभी –कभी हमारे सम्मुख ऐसे प्रश्न आते है कि हम सोच में पड़ जाते है कि दिये गये प्रश्न का उत्तर हम क्या लिखे अथवा दे ? इसका कारण प्रस्तुत प्रश्न का एक से अधिक उत्तर होना होता है । परीक्षा कक्ष में जब छात्र ऐसे प्रश्नों का सामना करना पड़ता है, तो वह प्रश्नों के जवाब लिखने में कठिनाई महसूस करता है । छात्र यहां प्रश्नों के उत्तर देते समय अपने विवके/समझ का उपयोग करता है । यही कारण है कि एक ही प्रश्न के उत्तर लिखने में छात्र अलग–अलग अंक प्राप्त करता है । चूंकि एक प्रश्न के अनेक उत्तर हो सकते है, और परीक्षक को प्रश्नों के उत्तर की जांच कर अंक देने में कठिनाई हो सकती है, अतः इससे बचने के लिए सर्वमान्य व सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर का चयन कर आदर्श उत्तर की घोषण की जाती है । इस आदर्श उत्तर के अनुसार परीक्षक उत्तर की जांच कर अंक देने का कार्य करता है ।

उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए शिक्षक को आंरभ से ही प्रश्नों के सही उत्तर लिखने के साथ–साथ, अनेक उत्तर में से सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर लिखने अथवा देने के सबंध में छात्रों को पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराते हुए अभ्यास कराना चाहिए, ताकि छात्रों का सही मूल्यांकन हो सके व छात्र उचित अंक प्राप्त कर सकें । एक प्रश्न के अनेक उत्तर कम शब्दों अथवा अधिक शब्दों में उत्तर लिखे जाने वाले दोनों प्रकार के प्रश्न हो सकते है । प्रश्नों के अनेक उत्तर प्रश्नों की प्रकृति व संदर्भ पर आधारित होते ह ।

उदाहरणः– कक्षा सातवी के बच्चों को मुगल काल के अंतर्गत अकबर के संबंध में पढ़ाने के बाद उत्तर लिखने के लिए प्रश्न दिया गया कि– अकबर कौन था ? छात्रों ने जिस प्रकार पाठ को पढ़ा व समझा उसके अनुसार अलग–अलग उत्तर दिये–

1. अकबर हुमायू का पुत्र था ।
2. अकबर जहांगीर का पिता था ।
3. अकबर हुमायू के बाद भारत का शासक था ।
4. अकबर शक्तिशाली योद्धा व मुगल सम्राट था ।
5. अकबर महान मुगल सम्राट था ।

यहां हम देख रहे है कि प्रस्तुत प्रश्न का एक से अधिक उत्तर है और सभी उत्तर सही है, जिसे छात्रों ने अपनी समझ के अनुसार लिखा अथवा दिया । इन अनेक उत्तरों में से सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर के चयन के लिए हमें प्रश्नों की प्रकृति और संदर्भ को ध्यान में रखना होगा । प्रश्न की प्रकृति और संदर्भ के अनुसार प्रस्तुत प्रश्न का सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर होगा – अकबर महान मुगल सम्राट था । इस उत्तर में अकबर के व्यक्तित्व का समग्र सार निहित है ।

इसी प्रकार ऐसे प्रश्न जिनका उत्तर विस्तार से देना होता है, का भी पर्याप्त अभ्यास कराया जाना चाहिए क्योंकि ऐसे प्रश्नों में ज्यादातर छात्र उन पंक्तियों का उल्लेख नही करते, जो संबंधित प्रश्न का सार होता है और फलस्वरूप कम अंक प्राप्त करते है ।

उदाहरण :– कक्षा सातवी में मुगलकाल के अंतर्गत अकबर के संबध में प्रश्न दिया गया कि – अकबर महान मुगल सम्राट क्यों था ? इस प्रश्न का उत्तर लिखते समय ज्यादातर छात्र अकबर की धार्मिक नीतियों का उल्लेख करते हुए यह सिद्ध करने का प्रयास करते है कि अपने धार्मिक नीतियों के कारण ही अकबर महान मुगल सम्राट था । वास्तविक रूप में अकबर के महान होने में जिन तथ्यों का योगदान रहा है उनमें से यह भी एक तथ्य है । किसी राज्य के सफल सम्राट होने में उसकी क्षेत्र विस्तार नीति, विजय प्राप्ति के तरिके, विजयोंपरांत क्षेत्र की शासन व्यवस्था, किसानों, व्यपारियों

व कारीगरों से संबंध व उनके विकास के अवसर, साहित्य व कलाओं में रूचि तथा प्रोत्साहन व राज्य के समस्त प्रजा की धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा के फलस्वरूप समाज व राज्य पर पड़ने वाले समरसता व समन्वय का प्रमुख योगदान होता है । दूसरे सब्दों में कह सकते है कि अकबर के महान मुगल सम्राट होने के संबंध में इन सभीतथ्यों का उल्लेख करना आवश्यक है, तभी उत्तर पूर्ण व सही माना जायेगा तथा छात्र उचित अंक प्राप्त कर पायेंगें ।

इससे लाभ :–

1. छात्र प्रश्न के सार/तात्पर्य को समझेंगे ।
2. बहुत से उत्तर में से सही व सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर देगें ।
3. अनावश्यक तथ्यों का उल्लेख करने से बचेगें ।
4. परीक्षा कक्ष में समय की बचत होगी और अच्छे अंक प्राप्त करेगें ।
5. विस्तृत प्रश्नों के उत्तर लिखते समय क्रमबद्धता का ध्यान रखेंगे ।

क्रमशः

रघुवंश मिश्रा
बी.आर.पी. कोटा

शिक्षा में नवाचार – पार्ट 41

प्रश्नसूचक शब्दों के क्रमों की महत्ता

इस अंक का आरंभ मैं एक कहानी से करता हूं। किसी राज्य में सुयोग्य नाम का राजा राज्य करता था । उसके पड़ोसी राज्य के राजा के साथ शत्रुता थी। सुयोग्य ने विचार किया कि जब तक उनके पास विशिष्ट शक्तियां नही होगीं, तब तक वह शत्रु राजा को पराजित नही कर सकता। अतः उन्होने वन प्रस्थान कर तपस्या करने का निश्चय किया। कठिन तपस्या के उपरांत भगवान ने उन्हे 8 विशिष्ट शस्त्र प्रदान किया और कहा कि एक निश्चित क्रम में प्रयोग करने पर ही ये शस्त्र प्रभावकारी होगें। अति उत्साह में राजा सुयोग्य शस्त्र पाकर पूछना भूल गया कि इनका क्रम क्या है ? राजा अपने राज्य वापस आ गया।

प्रकारांतर में दोनों राजाओं के बीच युद्ध आरंभ हुआ। राजा सुयोग्य युद्ध भूमि में प्राप्त विशिष्ट शस्त्रों का प्रयोग करने लगा, पर यह क्या ! एक भी शस्त्र अपना प्रभाव नही दिखा सका और शत्रु पक्ष कम शक्तिशाली होते हुए भी विजयी हो गया।

इस कहानी में वर्णित राजा सुयोग्य हमारे शिक्षक है, तपस्या – इसके द्वारा की गयी लम्बी अध्ययन, व दान में प्राप्त 8 विशिष्ट शस्त्र–प्रश्नसूचक शब्द–क्या, कौन, कहां, कब, किसका, कितना, कैसे, और क्यों तथा शत्रु पक्ष के राजा इन प्रश्नसूचक शब्दों के संबंध में बच्चों में भलीभांति समझ विकसित करने की चुनौती है व युद्धभूमि पाठ्य वस्तु का प्रस्तुतीकरण है।

कहानी का विषयगत विश्लेषण/ उदाहरण – कक्षा पांचवी के पाठ 6 **चित्रकार मोर** का सार यह है कि जंगल के सभी पक्षी रंग प्राप्त करने के लिए ब्रम्हा जी के पास गये और ब्रम्हा जी ने मोर को इस कार्य के लिए नियुक्त किया । अंत में सभी प्रक्षी अपने–अपने पसंद के अनुसार रंग प्राप्त कर प्रसन्न हुए ।

इस पाठ को शिक्षक द्वारा पढ़ाये जाने के बाद मैंने शिक्षक के बच्चों से प्रश्न करने के तरीके का अवलोकन किया । शिक्षक द्वारा बच्चों से प्रश्न करने का क्रम था –1. पक्षी बिना रंग के कैसे दिखते थे ? 2. पक्षी अपने आप को क्यों रंगवाना चाहते थें ? 3. रंग पाने के लिए पक्षी किसके पास गये ? 4. किस पक्षी को कौन सा रंग मिला ? 5 मोर कई रंगों का कैसे हो गया ? इन प्रश्नों का उत्तर कुछ बच्चों द्वारा ही दिया जा सका ।

किसी भी पाठ का अध्यापन करने के पश्चात शिक्षक निर्धारित करें की वे संबंधित पाठ्य वस्तु से किस क्रम में प्रश्न पूछेगा । इसके लिए प्रश्नसूचक शब्दों के क्रम को ध्यान में रखकर प्रश्न बनाये/करें । यह आवश्यक नही है कि सभी पाठ्य वस्तु से सभी प्रश्नसूचक शब्दों पर प्रश्न बनें, किन्तु यह आवश्यक है कि जो भी प्रश्न बने उसमें प्रश्नसूचक शब्द का प्रयोग निर्धारित क्रम में हो।

जैसे– उपरोक्त प्रस्तुत उदाहरण में प्रश्न करने का क्रम होना था–

1. रंगों को देखकर पक्षियों के मन में क्या इच्छा उत्पन्न हुई ?
2. ब्रम्हा जी कौन है ?
3. रंग पाने के लिए पक्षी किसके पास गये ?
4. मोर द्वारा सभी पक्षियों में रंग कैसे लगाया गया ?
5. सभी पक्षी रंग क्यों लगवाना चाहते थे ?

इस क्रम में प्रश्न पूछने पर ज्यादा बच्चों द्वारा उत्तर दिये जाने की सम्भावना होगी ।

क्रमशः

रघुवंश मिश्रा
बी.आर.पी. कोटा

शिक्षा में नवाचार – पार्ट 42

प्रश्न डायरी

अपने शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए प्रत्येक शिक्षक योजना बनाता है और इस योजना को अपने डायरी में लिखता है, जिसे हम शिक्षक डायरी के रूप में जानते है। अपने डायरी में शिक्षक द्वारा यह उल्लेख किया जाता है िकवह किसी पाठ के कितने अंश को निर्धारित समय में पढ़ायेगा और साथ ही साथ इस बात का भी उल्लेख करता है कि उस पाठ के अंश को पढ़ाने में उसे किन–किन शिक्षण सामाग्रियों की आवश्यकता पड़ेगी और वह इस शिक्षण सामाग्रियों का उपयोग शिक्षण के किन चरण में कैसे और क्यों करेगा ? दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते है कि शिक्षक डायरी के अनुसार शिक्षण करने से शिक्षक का शिक्षण क्रमिक व प्रभावशाली होता है , जिससे बच्चों की अधिगम दर में वृद्धि होती है ।

शिक्षक डायरी में अन्य बातों के अलावा अगर प्रस्तुत पाठ अंश पर पूछे जाने वाले प्रश्नों का उल्लेख स्पष्ट रूप से कर दिया जाय तो यह **सोने पर सुहागा** हो सकता है अर्थात शिक्षक अपने शिक्षक डायरी में इस बात का स्पष्ट उल्लेख करें कि वह अपने शिक्षण के दौरान छात्रों से क्या–क्या प्रश्न पूछेगें ? दूसरे शब्दों में कह सकते है कि शिक्षक अपने शिक्षण की प्रत्येक चरण में ज्यादा से ज्यादा प्रश्न बच्चों से करें और ये सभी प्रश्न पूर्व निर्धारित हो। उदाहरण– शिक्षक ने कक्षा 6 वी में इतिहास विषय के अंतर्गत सिंधु घाटी सभ्यता का एक अंश पढ़ाया। इस अंश पर पूछे जाने वाले उपयुक्त प्रश्नों पर आधारित शिक्षक डायरी का स्वरूप हो सकता है –

क्र.	दिनांक	विषय एवं पाठ	शिक्षण विधि	शिक्षण सामाग्री	पूछे जाने वाले प्रश्न	बच्चों की प्रतिकिया	पुनर्बलन
1	01.07.16	इतिहास सिंधु सभ्यता	आगमन	मानचित्र	1. लोगों के स्थायी रूप से बसने का जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा ? 2. आंरभ में लोग स्थायी रूप से कहां बसे ? 3. खेती के लिए सर्वाधिक उपयुक्त जमीन कहां मिलती है ? 4. भारत में सबसे पहले कहां पर विकसित सभ्यता दिखाई दी ? 5. सिंधु सभ्यता का विकास कब हुआ ? 6. सिंधु सभ्यता के आंरभिक विकसित स्थानों के क्या नाम थे ? 7. सिंधु सभ्यता के संबंध में कैसे जानकारी प्राप्त हुई ? 8. इसे सिंधु सभ्यता क्यों कहा गया ?	बच्चों द्वारा उत्तर दिया गया।	

उपरोक्त प्रश्नों से स्पष्ट है कि किसी भी पाठ के एक छोटे से अंश पर बहुत से प्रश्न पूछे जा सकते है ।

इससे लाभ :–

1. शिक्षण योजनाबद्ध व प्रभावशाली रूप से संचालित होगा ।
2. बच्चों की शिक्षण में रूचि व सक्रियता बढ़ेगी ।
3. बच्चों के आंकलन/मूल्यांकन का कार्य साथ–साथ होता रहेगा ।
4. बच्चों में विभिन्न प्रकार के प्रश्नों को समझने व उसके अनुरूप उत्तर लिखने/देने की क्षमता विकसित होगी ।
5. प्रस्तुत पाठ को नही समझने वाले बच्चों की पहचान होगी । इससे पुनर्बलन हेतु योजना बनाना आसान होगा ।

क्रमशः

रघुवंश मिश्रा
बी.आर.पी. कोटा

शिक्षा में नवाचार पार्ट 43
गृहकार्य के प्रश्न

अध्ययन में निरंतरता बनाऐं रखने हेतु बच्चों को घर में करने को कुछ कार्य दिये जाते है। बच्चों द्वारा घर में किया गया कार्य गृह कार्य कहलाता है। शिक्षक द्वारा यह कार्य प्रायः उन विषय वस्तुओं पर दिये जाते हैं जिनका अध्ययन उनके द्वारा उस दिन या कुछ दिन पहले कराया गया हो तथा इसमें उन प्रश्नो को सम्मिलित किया जाता हैं जो पाठ्यपुस्तक के अंत में अभ्यास कार्य के रुप में दिए जाते है।

यदि एक प्राथमिक शाला के बच्चों की बात करे तो चार विषय से संबंधित गृहकार्य उन्हें प्रतिदिन मिलते हैं और उच्च प्राथमिक स्तर पर छः विषय से संबंधित गृहकार्य करने होते हैं। बच्चों को घर में उपलब्ध समय व उनकी मनःस्थिति के अनुसार दिए गए गृहकार्य की पूर्णता कठिन प्रतीत होती है। ऐसी परिस्थिति में ज्यादातर बच्चे गृहकार्य पूरा नही कर पाते और उनके मन में विषय,शाला व शिक्षको के प्रति भय का भाव उत्पन्न होता है जो उनके नियमित व स्वाभाविक शाला आगमन में अवरोघ उत्पन्न करता है। कुछ बच्चे अपने घर के बड़े सदस्यों से यह कार्य करवाते है।

उपरोक्त तथ्यो से स्पष्ट है कि गृह कार्य बच्चों में मानसिक द्वंद की स्थिति उत्पन्न करता है। एक जागरुक शिक्षक को बच्चो की मनःस्थिति के अनुसार गृहकार्य को व्यवस्थित रुप देने का प्रयास करना चाहिए। इसके लिये शिक्षक को निम्न बिन्दुओ पर ध्यान केंद्रित करना होगा–

1. गृह कार्य अधिक ना हो। गृहकार्य का उद्येश्य बच्चों के समय का उचित प्रबंधन हैं न कि उन्हें सजा देना। अतः प्रतिदिन दिये जाने वाले गृहकार्य ऐसा हो जिसे बच्चे स्वयं व बिना किसी कठिनाई के कर सकें।
2. गृहकार्य कें प्रश्न पढ़ाये गए पाठ्यवस्तु पर आधारित हो न कि अभ्यास कार्य के प्रश्नो पर। क्योकि बच्चें अभ्यास कार्य के प्रश्नो को अपने घर के बड़े सदस्यो से हल कराने का प्रयास करते है या फिर अपने किसी सहपाठी का नकल करते है।
3. एक दिन में केवल एक विषय का ह गृहकार्य दें। उच्च प्राथमिक स्तर पर पढ़ाये जाने वाले छः विषयो के शिक्षक आपस में तय करके एक–एक दिन अपने–अपने विषय का गृहकार्य दें।
4. गृह कार्य के प्रश्न का चयन शिक्षक अपने डायरी में पूछे गए प्रश्नो से करे। इससे बच्चे गृहकार्य के प्रश्नो को अपने सुने हुए चर्चा व पाठ्य पुस्तक को पुनः पढ़कर देने का प्रयास करेगे। आवश्यकतानुसार वे अपने सहपाठी से चर्चा भी करेगें।
5. गृह कार्य का नियमित जांच कर टीप भी लिखें। इससे बच्चें गृह कार्य के प्रश्नो को सतर्कता से हल करेंगें और टीप से प्रोत्साहित होकर निरंतरता भी बनाएं रखेंगें।

गृहकार्य के प्रश्नों के उदाहरण –: कक्षा छठवी में इतिहास विषय के अन्तर्गत वैदिक काल पाठ पढ़ाया गया। पढाने के बाद शिक्षक द्वारा इसके कुछ अंश पर ही बहुत से छोटे–छोटे प्रश्न गृहकार्य के रुप में दिये गए। ये सभी प्रश्न ऐसे है जो अभ्यास के प्रश्नों में सम्मिलित नही है किंतु वैदिक काल के संबंध में बच्चो को पूर्ण जानकारी देने हेतु अतिआवश्यक व महत्वपूर्ण है।

प्रश्न 1. – वैदिक साहित्य का दूसरा नाम क्या है ?
प्रश्न 2. – श्रुति साहित्य से क्या तात्पर्य है ?
प्रश्न 3.– ऋग्वैदिक काल में लोग कहॉ रहते थे ?
प्रश्न 4. – ऋग्वैद के मंत्रो को क्या कहा जाता हैं ?
प्रश्न 5. – ऋग्वैदिक संस्कृति का विकास किसने किया ?
प्रश्न 6. – ऋग्वैदिक संस्कृति का विकास कैसे हुआ ?
प्रश्न 7. – ऋग्वैदिक साहित्य को श्रुति साहित्य क्यों कहा गया।

इससे लाभ –:

1. बच्चे पाठ्यवस्तु को विस्तृत व गहराई से समझेंगें।
2. बच्चों में स्वयं प्रयास कर उत्तर खोजने,जानने,व समझने की प्रवृत्ति विकसित होगी।
3. नकल करने से बचेंगें।
4. गृहकार्य को रुचि को आनंद के साथ करेगें।
5. अभ्यास कार्य के प्रश्नों के अतिरिक्त अन्य महत्वपूर्ण तथ्यों पर भी ध्यान केन्द्रित करेगे।

क्रमशः

रघुवंश मिश्रा
उच्च वर्ग शिक्षक
कोटा

शिक्षा में नवाचार पार्ट 44
प्रश्नों से निबंध लेखन

सामान्य अर्थो में विचारों का प्रवाहपूर्ण प्रस्तुतीकरण निबंध कहलाता हैं। हम अपने दैनिक जीवन में किसी विशेष विषय/तथ्य/बिंदु पर अपने अंतः मन में एकत्रित विचारों को जब क्रमबध्द व प्रवाहपूर्ण ढंग से लिखकर अभिव्यक्त करने का प्रयास करते है तो हमारे इस प्रयास का प्रतिफल निबंध रुप में सामने आता हैं। यह अलग बात है कि उम्र व स्तर के अनुसार इसका रुप परिवर्तित होते रहता है अर्थात आरंभिक अवस्था में जहॉ हमारा विचार मूर्त वस्तु/स्थितियों के इर्द–गिर्द घुमता है, वही परिपक्वता आने के साथ–साथ यह अमूर्त वस्तु/स्थितियों पर केन्द्रित हो जाता हैं। जैसे आरंभिक कक्षाओं में बच्चो को जहॉ मूर्त वस्तुओं/स्थितियों पर निबंध लिखने को दिया जाता है वही उच्च कक्षाओ में अमूर्त वस्तुओ/स्थितियों पर ।

विचाारों के प्रस्तुतीकरण या निबंध लेखन के संबंध में ज्यादातर बच्चों में यह सामान्य प्रवृत्ति पायी जाती है कि वे इनसे संबंधित बातों को याद कर लिखने का प्रयास करते है। इससे जहॉ बच्चो में मौलिक विचारो को प्रस्तुत करने में बाधा उत्पन्न होती हैं वहीं याद किये हुए विषय के अतिरिक्त अन्य विषयों पर वे कुछ भी नही लिख पाते। प्रत्येंक बच्चा प्रत्येंक विषय पर कुछ न कुछ लिख सके इसके लिये आवश्यक है कि शिक्षक द्वाा बच्चो के सामने कुछ सूत्र प्रस्तुत किया जाए, जिसका उपयोग कर बच्चे दिये गये विषय पर कुद लिख सकें और इस संबंध में प्रश्न सूचक शब्दों से बढ़कर कोई दूसरा सूत्र नही हो सकता। कहने का तात्पर्य यह है कि हम दिए गए विषय बिदु पर प्रश्न सूचक शब्दों का उपयोग कर एक संक्षिप्त निबंध की रचना करना सीख/सीखा सकते है।

उदाहरण –: कक्षा आठवी को मेरा परिवार विषय बिंदु पर निबंध लिखने को कहा गया। इस विषय पर प्रश्न सूचक शब्दों का उपयोग इस प्रकार कर सकते हैं –:

1. परिवार क्या हैं ?
2. परिवार में कौंन कौन लोग रहते हैं?
3. परिवार का अस्ततित्व क्या हैं ?
4. परिवार कहॉ–कहॉ पायी जाती हैं ?
5. परिवार पर किसका अधिकार होता हैं?
6. परिवार कितने प्रकार के होते हैं?
7. परिवार की रचना कैसे होती हैं ?
8. परिवार हमारे लिये क्यों महत्वपूर्ण हैं ?

दिए गए विषय बिंदु मेरा परिवार पर प्रश्न सूचक शब्दों का उपयोग कर प्रश्न बनाते हुए इन प्रश्नों के उत्तर को क्रमबध्द व प्रवाहपूर्ण रुप देकर हम एक संक्षिप्त निबंध लिख सकते है :–

बच्चों द्वारा इस पर निबंध की रचना –:

(मेरा–परिवार)

एक घर के रहनें वाले कुछ लोग परिवार कहलाते हैं। मेरे परिवार में दादा–दादी, मम्मी–पापा व भाई–बहन रहते है। मेरा परिवार बहुत दिनों से हैं और सभी जगह परिवार देखने को मिलता है। परिवार पर दादा जी का अधिकार हैं क्योंकि सभी काम उनसे पूछ कर किया जाता हैं।

परिवार दो प्रकार के होते है – 1. बड़ा परिवार, 2. छोटा परिवार

बड़े परिवार में दादा–दादी, मम्मी–पापा और भाई–बहन सभी एक साथ रहते हैं। छोटे परिवार में मम्मी– पापा और उनके बच्चें रहते है।

उम्र होने पर विवाह किया जाता हैं और विवाह के कुछ दिनो बाद बच्चे होने पर उसका अलग परिवार बन जाता हैं। परिवार में मेरी सभी आवश्यकताओं जैसे– भोजन, स्वास्थ्य, शिक्षा व सुरक्षा की पूर्ति होती है। इस कारण मुझे मेरा परिवार अच्छा लगता है।

इस प्रकार हम पाते है कि प्रश्न सूचक शब्दों को सूत्र रुप में प्रयुक्त कर हम किसी भी विषय पर संक्षिप्त निबंध की रचना त्वरित कर सकते है।

इससे लाभ :–

1. बच्चे निबंध लेखन के लिए रटने के कार्यो से बचेंगें।
2. किसी भी विषय पर अपने विचारों को क्रमबद्ध रुप से अभिव्यक्त करने में सक्षम होगे।
3. उम्र व कक्षा के स्तर कें अनुसार निबंध लेखन की शैली में सुधार होगी।
4. मूर्त रुप से अमूर्त विषयों मे भी निबंध लिखना सीखेंगें।
5. परीक्षाओ में अच्छें अंक प्राप्त होगें।

रघुवंश मिश्रा
उच्च वर्ग शिक्षक
कोटा

क्रमशः

शिक्षा में नवाचार पार्ट–45
प्रश्न और गुणवत्ता

शिक्षक कक्षा में अध्यापन कार्य आरंभ करने के पूर्व, दौरान व पश्चात बच्चो से प्रश्न कर जानने का प्रयास करता हैं कि कि बच्चो ने उनके द्वारा पढ़ाये गए/जाने वाले पाठ्यवस्तु को सही ढंग से समझा हैं या नही। बच्चों के द्वारा जवाब दिए जाने पर शिक्षक प्रसन्न होता है और नही दिए जाने की स्थिति में सोचता हैं कि बच्चे ने पाठ्यक्रम के उस विषय–वस्तु को नही समझा हैं। यह तथ्य का केवल एक पहलू हैं। यहॉ शिक्षक को यह विचार कर देखना चाहिए कि उनके द्वारा पूछे गए किस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर बच्चों द्वारा नही दिया गया। अपने प्रश्नों के स्वरुप में परिवर्तन कर ज्यादा से ज्यादा बच्चों से सही उत्तर प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि कभी–कभी उत्तर न मिलना बच्चो के पाठ्यवस्तु के समझ पर निर्भर न होकर पूछे गए प्रश्नों के स्वरुप पर निर्भर करता हैं। अतः शिक्षक को बच्चो से प्रश्न करने के दौरान कुछ मुख्य बातों को ध्यान में रखना होगा –:

1. **न्यूनतम अधिगम स्तर** –: एक निश्चित समय में विषयगत बच्चों द्वारा प्राप्त दक्षता न्यूनतम अधिगम स्तर कहलाता हैं। इसके अन्तर्गत कक्षावार, विषयवार बच्चों द्वारा से प्राप्त की जा सकने वाली दक्षता का समयानुसार वितरण/निर्धारिण किया जाता है। शिक्षक द्वारा पूछा गया वह प्रश्न जो न्यूनतम अधिगम स्तर से संबंधित होता हैं, का जवाब बच्चे सरलता से देते है। जिन प्रश्नों का उत्तर बच्चों द्वारा न दिया जाए उसके संबंध में शिक्षक को एक बार अवश्य विचार करना चाहिए कि उनका प्रश्न न्यूनतम अधिगम स्तर के अनुसार हैं अथवा नही। उदाहरण – कक्षा 2 में गणित विषय कें अंर्तगत माह सितंबर की स्थिति में दो अंको की जोड़ व दो अंको का एक अंक के साथ गुणा की दक्षता प्राप्त करना न्यूनतम अधिगम स्तर के अनुसार निर्धारित है। अब यदि शिक्षक द्वारा बच्चों को तीन अंको का जोड़ व दो अंको को दो अंको से गुणा पर आधारित प्रश्न दिया जाए तो स्वभाविकरुप से बच्चे त्रुटि करेंगें। अतः शिक्षक को बच्चों से प्रश्न करते समय इस तथ्य को सदैव अपने ध्यान में रखना चाहिए।

2. **उम्र व स्तर** –: वर्तमान समय में कक्षावार बच्चों की उम्र लगभग समान होती हैं किन्तु स्तर अलग–अलग होते हैं। कक्षा के कुछ बच्चें पाठ्यवस्तु को जल्दी समझ जाते है और कुछ देर से।विषय शिक्षक को इन बातो को ध्यान में रखकर बच्चों से प्रश्न करना चाहिए। जैसे वे बच्चें जो जल्दी समझते हैं उनसे एक की प्रश्न के द्वारा पाठ्यवस्तु के संबंध में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं किन्तु ऐसे बच्चे जो देर से समझते हैं, उनसे उसी पाठ्यवस्तु पर छोटे–छोटे प्रश्नो के माध्यम से जानकारी प्राप्त कर सकते है। उदाहरण –कक्षा 6 वी में सिन्धु घाटी सभ्यता पढ़ाया गया। वे बच्चें जिन्होंने इसे शीघ्रता से समझा उनसे प्रश्न कर सकते हैं कि– सिन्धु सभ्यता की प्रमुख विशेषताएॅ क्या–क्या है? ऐसे बच्चे जो देर से समझते है, उनसे इसी पाठ्यवस्तु पर इस प्रकर प्रश्न कर सकते है– 1.सिन्धु सभ्यता के लोग अपना घर किससे बनाते थे। 2. उनके घरों में क्या–क्या चीजें होती थी? 3. अपने नगर की सुरक्षा के लिये वे क्या उपाय करते थें? 4. उनके घरो में उपयोग किये गए पानी निकास की व्यवस्था क्या थी? 5. सिंधु सभ्यता में सड़के कैसी थी? 6. सिंधु सभ्यता में मकान कैसे/कहॉ बने होते थे ?

3. **स्मृति आधारित प्रश्नों से परहेज** –: हम यह भी पाते है कि शिक्षक द्वारा बच्चों से ऐसे प्रश्न किये जाते हैं जिनका अध्यापन प्रश्न पूछने के दिन से काफी पहले कराया गया हो। ऐसे प्रश्नों का उत्तर दिया जाना बच्चो की समझ/दक्षता पर आधारित न होकर स्मृति पर आधारित होता है। हम यह भी जानते है कि सभी बच्चों की स्मरण शक्ति अलग–अलग होती है। अतः बच्चें अपना स्मरण के अनुसार उत्तर देने का प्रयास करेंगें न कि समझ के अनुसार। अतः शिक्षक को समृति आधारित

प्रश्न कम से कम करना चाहिए। उदाहरण– कक्षा 7 वी में बच्चो को अकबर के संबंध में पढ़ाने के बाद प्रश्न किया गया कि– अकबर द्वारा इबादत खान की स्थापना क्यों की गई? यह प्रश्न समझ आधरित हैं किन्तु बच्चों से जब यह पूछा जाये कि अकबर ने कब–कब किन राज्यो को जीता, तो यह स्मृति आधारित प्रश्न हैं।

4. **उपस्थिति** :– शिक्षक द्वारा पूछे गए प्रश्नों का बच्चों द्वारा जवाब दिया जाना उनकी उपस्थिति पर भी निर्भर करता हैं। स्वाभाविक है कि ऐसे बच्चे जो नियमितरुप से कक्षा में उपस्थित रहते है उनके द्वारा जवाब सरलता व सही ढंग से दिया जायेगा। शिक्षक द्वारा अपने अध्यापन का पुनरावृत्ति किए बिना ऐसे बच्चों से प्रश्न नही किया जाना चाहिए जो कम से कम उस पाठ्य वस्तु के अध्यापन के दिन उपस्थित न रहा हो।

5. **सीखने के अवसर** –: हमारे आस पास बहुत से ऐसे बच्चे होते हैं जिन्हें शाला के अतिरिक्त अन्य स्थलो पर सीखने के अवसर उपलब्ध नही होते है। स्वाभाविकरुप से ऐसे बच्चें उन बच्चों की अपेक्षा जिन्हें सीखने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध नही होते हैं, कम जवाब देंगें। ऐसे बच्चों को अन्य बच्चों के समक्ष लाने के लिए शिक्षक को अपनी ओर से अतिरिक्त प्रयास कर समुचित अवसर देने का प्रयास करना चाहिए।

इस प्रकार उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि शिक्षक द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर प्राप्त होना या ना होना बहुत सी बातों पर निर्भर करता है। उपरोक्त तथ्यों को नजर अंदाज कर प्रश्न पूछने से उत्तर प्राप्त नही होने की स्थिति में हम यह मान लेते है कि अमूक बच्चे/शाला शैक्षणिक गुणवत्ता की दृष्टि से कमजोर है। उचित कारणों को जाने बिना सही समाधान नही हो पाता और बच्चे तथा शाला के संबंध में गलत घारणा बनने लगती हैं। इससे यह भी स्पष्ट है कि बच्चें या शाला की शैक्षणिक गुणवत्ता का सीधा–सीधा संबंध पूछे गए प्रश्नों के स्वरुप व तरीके से होता हैं। अतः हम अपने प्रश्नों के स्वरुप व पूछने के तरीके में समय/परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन कर शैक्षिक गुणवत्ता की दर में सकारात्मक वृध्दि कर सकते हैं।

इससे लाभ –:

1. कब क्या प्रश्न करें इसकी जानकारी होगी।
2. बच्चो की स्थिति के अनुसार अलग–अलग प्रश्न निर्धारित करने मे हमें सहायता प्राप्त होगी।
3. प्रश्नों के स्वरुप में परिवर्तन कर ज्यादा से ज्यादा बच्चो से सही जवाब प्राप्त होगा।
4. शिक्षण प्रभावशाली बनेगा।
5. बच्चे प्रोत्साहित होकर रुचि से सींखने का प्रयास करेगें।

रघुवंश मिश्रा
उच्च वर्ग शिक्षक
कोटा

क्रमशः

शिक्षा में नवाचार पार्ट 46
कक्षावार प्रश्न सूचक शब्दों का उपयोग

मनुष्य में जिज्ञासा जन्म से ही होती हैं। जब तक बच्चें व्यापक रुप से भाषाई संसार के सम्पर्क में नही आता, तक तक उनकी जिज्ञासा पूर्ति का आधार शारीरिक भाव भंगिमाएं होती है। जैसे जैसे बच्चो का सम्पर्क भाषा से होता हैं बच्चे अपने जिज्ञासाओ की पूर्ति में इनका उपयोग करना सीखने लगता है।जब ता हम अपने आस पास के ऐसे बच्चे जिनकी औपचारिक शिक्षा आरंभ नही हुई है, के व्यवहार का निरीक्षण करते हैं तथा पाते है। कि उनमें उत्पन्न जिज्ञासा प्रथम स्तर की होती हैं अर्थात् वे अपने आस पास की वस्तुओं/जीवों के बारे में केवल यह जानना चाहता हैं कि वे क्या हैं और कौन हैं! ठस प्रकार अपने औपचारिक शिक्षा आरंभ होने के पूर्व वे अपने आस पास की ऐसी वस्तुओं/जीवों के बारे में जानने लगता हैं जो उनके सम्पर्क में बार बार आता है।

कक्षा 1 में प्रवेश लेने के साथ ही बच्चों की औपचारिक शिक्षा आरंभ होती हैं। कक्षा 1 के लिये निर्धारित पाठ्यक्रमो का सूक्ष्मता से विश्लेषण करने पर हम पाते है कि एक ओर इसमे जहॉ बच्चो को आस पास स्थित वस्तुओ/जीवो से परिचित कराया गया हैं वही दूसरी ओर कुछ ऐसे वस्तुआं/जीवों के बारे में भी बतलाया गया है जिनके संबंध में इस जानकारी का प्रमुख आधार क्या और कौन ही हैं।

उपरोक्त विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता हैं कि चूॅकि अभी बच्चों में जिज्ञासा प्रथम स्तर की होती हैं इसलिये इसकी पूर्ति पर ही विशेष ध्यान केन्द्रित किया गया हैं किन्तु द्वितीय स्तर की ज्ञिास उत्पन्न हो सके इसके लिये भी आधार भूमि तैयार करने की कोशिश अर्थातकहॉ और कअ पर आधरित कुछ प्रश्न रखा गये हैं इसका तात्पर्य यह नही है कि बच्चों में इस स्तर पर अन्य जिज्ञासा स्तर की उत्पत्ती नही होती और उन्हें शेष प्रश्न सूचक शब्दो के उपयोग से परिचित न कराया जाए। इसका तात्पर्य केवल है कि इस स्तर पर विशेष ध्यान केवल क्याऔर कौन से संबंधित जिज्ञासा पूर्ति पर होना चाहिए शेष प्रश्न सूचक शब्दों का संबंध केवल आधारभूति तैयार करने के रुप में होना चाहिए। इसे हम वृत्त चित्र के माध्यम से समझ सकते है।

इससे लाभ –:

1. बच्चों के जिज्ञासा स्तर के अनुसार पाठ्यक्रम निर्धारण में।
2. शिक्षण रणनीति बनाने में।
3. बच्चों के प्रश्न पूछने में।
4. मूल्यांकन करने में

बच्चों के मानसिक स्थिति का आंकलन करने में।

रघुवंश मिश्रा
उच्च वर्ग शिक्षक
कोटा

क्रमशः

शिक्षा में नवचार पार्ट 47
कक्षावार प्रश्न सूचक शब्द का उपयोग

बच्चा जैसे ही कक्षा 2 में प्रवेश करता है वह अपने आस–पास की सभी वस्तुओं/जीवों के बारे में जानता और पहचानता हैं। इस स्तर पर पूर्व परिचित वस्तुओं/जीवों के बारे में सामान्य पुनरावृत्ति के अतिरिक्त अपरिचित वस्तुओ/जीवों के संबंध मे जानकारी देने पर ज्यादा जोर देना चाहिए। इस स्तर पर बच्चों में ज्यादा जिज्ञासा उत्पत्ती के द्वितीय व तृतीय स्तर के लिए एक सशक्त आधार बन चुका है। अतः प्रथम स्तर की जिज्ञासा को विस्तारित करते हुए उनका संबंध कब और किसके से जोड का बतलाना सही होगा उदाहरण – बच्चे को हिरण,बाघ,हाथी आदि से परिचित कराया गया तो उन्हें यह भी बतलाएँ कि ये कहाँ रहते हैं, इसी प्रकार बच्चों की दैनिक जीवन से जूड़ी कार्यो का संबंध समय से जोड़कर बतलाएँ जैसे – तुम कब उठते हो?,तुम कब खेलते हो?, आदि किन्तु इस स्तर पर कब से संबंधित जानकारी देते समय यह विशेष ध्यान रखें कि यह अवधि से ज्यादा संबंधित हो, निश्चितत समय से कम इसी प्रकार बच्चों द्वारा उपयोग किए जाने वाले वस्तुओ की सहायता से किसका के संबंध में जानकारी दे सकते है जैसे यह किसका पेन हैं? यह किसका बैग है? इत्यादि।

चतुर्थ,पंचम और षष्ठम स्तर की जिज्ञासा उत्तपत्ति के क्रम में अधार तैयार करने के लिये कितना पर आधारित कुछ सरल और स्पष्ट प्रश्न की जानकारी देना प्रारंभ कर होगा। इसके अतिरिक्त कैसे और क्यों आधारित ऐसे प्रश्न ही बच्चो से करें, जो उनके अनुभवो से व्यापक और गहराई से जुड़ा हो। जैसे – तुम बाजार कैसे जाते हो?, तुम अपने मित्र से क्यो लड रहे थे?आदि।

इसे हम वृत्त चित्र के द्वारा भी समझ सकते है।

इससे लाभ –:

1. बच्चो में विकसीत समझ के अनुसार शिक्षण कर सकेगे।
2. बच्चो के अनुभवों पर विशेष ध्यान केन्द्रित कर शिक्षण करने से बच्चो की रुचि बढ़ेगी।
3. बच्चो की जिज्ञासा क्रमशः बढ़ेगी।
4. मनोविज्ञान के नियमो का पालन होगा।
5. बच्चो के अनुभवो को महत्व देने से बच्चे बिना भय के अपने विचारो को अभिव्यक्त करेगे।

रघुवंश मिश्रा
उच्च वर्ग शिक्षक
कोटा

क्रमशः

शिक्षा में नवाचार पार्ट 48
कक्षावार प्रश्न सूचक शब्दो का उपयोग

प्राथमिक स्तर पर कक्षा 3 का महत्वपूर्ण स्थान है। कक्षा 1 एवं 2 में जहॉ सभी विषयो के संबंध में बच्चो का एक सशक्त मानसिक आधार तैयार होता है वहीं कक्षा 3 से इस मजबूत आधार पर भवन बनने का कार्य तीव्र गति से होने लगता हैं। बच्चे इस कक्षा के आते तक सभी विषयो की आधारभूत बाो को जानने और समझने के लगते है। अगली कक्षाओ में जो भी विषयगत जानकारी दी जाती हैं वह इन आरंभिक जानकारियो का विस्तारित रुप होता है,जो कक्षानुसार क्रमशः बढ़ते रहता है।

इसी प्रकार प्रश्न सूचक शब्दों के प्रयोग पर भी कहा जा सकता है कि बचचे इस स्तर पर क्या,कौन,कहॉ,कब,किसका इत्यादि को समझते हुए अपने दैनिक जीन में इसका प्रयोग करते है। कितना,कैसे,और क्यो के प्रयोग पर बच्चे अभी भी त्रुटि करते है। कक्षा 3 में आरंभिक प्रश्न सूचक शब्दो के प्रयोग सीखने पर विशेष ध्यान केन्द्रित किय जाना चाहिए,इसके लिये पूर्व में बतलाएं गए कितना पर आधारित गतिविधियोको अनिवार्य रुप से कराया जाना होगा।

कक्षा 3 बच्चे आरंभिक प्रश्न सूचक शब्दो,क्या,कौन,कहॉ,कब,व किसका के लिये प्रयुक्त बहुवचन शब्दो जैसे क्या–क्या,कौन–कौन,कहॉ,कहॉ,कब–कब,व किसके/किनके इत्यादि को जानना समझना व उपयोग करना सीखते हैं इसके अतिरिक्त वे इन प्रश्न सूचक शब्दो का प्रयोग मूर्त से अमूर्त के रुप में भी करना आरंभ करते है। जैसे – हमें धरो की सफाई के लिये क्या–क्या करना चाहिए? प्रतिदिन स्नान करने के क्या फायदे होते हैं? इत्यादि। इसी प्रकार समय/अवधी से संबंधित प्रश्न सूचक षब्द कब को निष्चित और अनिश्चित समय दोनो के लिये प्रयोग करना जानने लगते है। जैसे तुम्हारी शाला कब लगती है? तुम यहॉ कब से रह रहे हो?,इत्यदि।

इस स्तर तक आते आते बचचे कितना को मूर्त और अमूर्त दोनों रुपों में समझना आरंभ करते है। बच्चे अपने आस पास की सभी एसी चीजें जिन्हें मापा जाता है की तुलनात्मक अध्ययन द्वारा समझना आरंभ करते है, कि कौन सी माप बड़ी,छोटी,ज्यादा,कम,व निश्चित माप के रुप में कितना कि0ग्रा0,कितना लीटर,कितना मीटर,है! इन सभी प्रश्न सूचक शब्दों के प्रयषेग में ज्यादा अपेक्षित दक्षता प्राप्त करने से कैसे और क्यों जैसे विशिष्ठप्रश्न सूचक शब्दों के प्रयोग सींखने के लिये एक सशक्त मानसिक आधार तैयार होता है जिसका आगे की कक्षाओ में ज्यादा उपयोग किया गया है।

इससे लाभ –

1. शिक्षण रणनिती बनाने में।
2. ईकाई व अन्य मूल्यांकन में।
3. बच्चों के कक्षागत स्तर के अनुसार प्रश्न पूछने में।
4. पाठ्यवस्तु को उदाहरण देकर समझाने में।
5. बच्चों के कम्रिक जिज्ञासा स्तर विकसीत करने में।

रघुवंश मिश्रा
उच्च वर्ग शिक्षक
कोटा

क्रमशः

शिक्षा में नवाचार पार्ट 49
कक्षावार प्रश्न सूचक शब्दों का उपयोग

सुनियोजित औपचारिक शिक्षा के फलस्वरुप कक्षा 4 तक बच्चो की भाषाई क्षमता सुदृढ़ हो जाता हैं। इस स्तर व आयु के बच्चे अपने आस पास की विभिन्न वस्तुओ और जींवो के बारे में न केवल जानने लगते हैं अपितु वे इनकी विविध रुपो व किया कलापो से भी परिचित होते हैं। यह अलग बात है कि वे इनका नियमानुसार वर्गीकरण नही कर पाते। कक्षा 4 के बच्चे अंतिम दो प्रश्न सूचक शब्द कैसे और क्यों के अतिरिक्त अन्य सभी प्रश्न सूचक शब्दो के बहुवचन रुप का न केवल उपयांगे करते है अपितु वे इन प्रश्न सूचक शब्दो को अमूर्तरुप में भी उपयागे करने लगते हैं । यही कारण है कि कक्षा 4 के निर्धारित विषयवार पाठ्यक्रमों मे इन प्रश्नसूचक शब्दो का उपयागे हमे दोनो अर्थात बहुवचन व अमूर्तरुपों में देखने को मिलता हैं। बच्चें अपने समान्य दिनचर्या के वार्तालाप और कार्यो में भी इनका उपयोग करते है जैसे किसी बच्चे को कहीं जाना है तो वह अपने दोस्तो से पूछता है कि मेरे साथ कौन–कौन जाएगा? कब –कब किसको क्या करना है? कही कुछ खाना हो तो पुछता है कि कौन–कौन क्या खाऐगा? कब–कब किसको क्या करना है, या कहॉ कहॉ कौन बैठेगा? इत्यादि, इसके अतिरिक्त वे इन प्रश्न सूचक शब्दो को अमूर्तरुप में भी समझकर अपने दैनिक जीवन में भी आवश्यकता व सन्दर्भ के अनुसार उपयोग करता है। जैसे – हम पानी न पीए तो क्या होगा? सूरज के नही निकलने से क्या–क्या परेशानी हो सकती है, इत्यादि। शिक्षक के लिये इस स्तर पर बच्चो मे ं कसै ं आरै क्यों जैसे महत्वपूर्ण प्रश्न सूचक शब्दों के उपयोग हेतु दक्षता विकसित करने की महती जिम्मेदारी होती हैं। जैसा कि हमने पूर्व के अंको में देखा है कि कैसे का उपयोग भी दो रुपो अर्थात मूर्त व अर्मूत दोनो के लिये किया जाता है। कक्षा 3 तक जहॉ कैसे प्रश्न सूचक शब्दो का उपयोग आंशिक रुप से किया जाता था वही इस स्तर से इसका उपयोग मूर्त व अर्मूत दोनो रुपो में व्यापकरुप से किया जाना होगा। हम यह भी जानते है कि कैसे का उपयोग साधन/तरीका/विधि/ढंग जानने के लिये किया जाता है। साधन और तरीका जहॉ कैसे के लिये उपयोग किये जाने वाले मूर्तरुपो का घोतक हैं वही विधि/ढंग अमूर्त रुपो क। जैसें बच्चे से प्रश्न पूछने पर कि तुम बिलासपुर कैसे जाओगे? उपयोग में लाये बच्चे का उत्तर जैसे बिलासपुर जाने के लिये गए साधन जैसे– सायकल,मोटर सायकल,बस व ट्रेन हो सकता हैं, इसी प्रकार यदि किसी बच्चे से पुछा जाएं कि तुम किसी भारी पत्थर को खिसकाकर दूसरी जगह कैसे रख सकते हो? यहॉ पर बच्चे पत्थर खिसकाने के सम्भावित विधि/ढंग क अनुसार जवाब देगा। जैसे– अकेले ताकत लगाकर दोसे ज्यादा बच्चे मिलकर पत्थर के किसी खाली जगह पर लकड़ी फॅसाकर पत्थर को मोटी रस्सी से बांधने के पश्चत खिचकर इत्यादि । अतः शिक्षक को इन सभी तथ्यों को अपने ध्यान में रखकर बच्चो में दक्षता विकास हेतु स्पष्ट कार्य योजना के साथ अध्यापन करना होगा।

जहॉ तक कार्य कारण पर आधारित प्रश्न सूचक शब्द क्यों का प्रयागे भी स्पष्ट व संक्षिप्त कारण जानने हेतु किया जाना चाहिए। कक्षा 1 से 3 के बीच में जहॉ भी क्यों का उपयागे किया गया है वहॉ इसका उद्यश्ेय केवल बच्चो मे ं मानसिक आधार भूमि तयैार करना हैं न कि सोचनें आरै तर्क शक्ति का ं बढ़ाना। कक्षा 4 में भी क्यों का उपयागे वही किया गया हैं जिसे बच्चे ने प्रत्यक्ष रुप से अपने पाठ्यक्रमो में पढ़ा है या अपने जीवन में अनुभव किया हैं जैसे – दौड़ने से सांस क्यो फूलने लगती हैं? पहाड़ी क्षेत्रों में लकड़ी के घर क्यों बनाए जाते हैं, इत्यादि। इस स्तर पर शिक्षक को क्यो से संबंधित ऐसे प्रश्न नही करना चाहिए,जिसे बच्च्चे ने प्रत्यक्ष रुप से पढ़ा या अनुभव न किया हो। जसै – हमें गर्मी के दिना ं में सफदे कपड़े क्यो पहनना चाहिए? लोहे की

भारी जहाज समुद्र में क्यो नही डूबती? ये प्रश्न उस स्थिति में पूछा जाना चाहिए जब बच्चो में कार्य कारण के संबंध में चिंतन व तर्क शक्ति का विकास होना आरंभ हो जाए इसके लिये कक्षा 5 से प्रयास किया जाना प्रासंगिक होगा।

इससे लाभ –

1. बच्चो की मानसिक क्षमता के अनुसार प्रश्न करने में।?
2. बच्चो के स्वभाविक मूल्यांकन में।
3. बच्चो को हीनभावना से बचाने में।

रघुवंश मिश्रा
उच्च वर्ग शिक्षक
कोटा

क्रमशः

शिक्षा में नवाचार पार्ट 50
कक्षावार प्रश्न सूचक शब्दों का उपयोग

सिद्धांत रुप में यह माना जाता हैं कि कक्षा 5 के बच्चे अपने आस पास बोले जाने वाले सभी शब्दों व वाक्यो से परिचित होते हैं तथा इसका उपयागे वे अपने समान समूह में स्वतंत्रता पूर्वक करते है। आगे की कक्षाओ में बच्चे जो भी विषयगत व भाषागत जानकारियां प्राप्त करते हैं, वह प्राथमिक स्तर पर उनके द्वारा प्राप्त जानकारियों का विस्तारित रुप होता हैं। जैसे कक्षा 5 वी तक बच्चे गणित विषय में जिन जिन संक्रियाओ को सीखतें हैं आगे की कक्षाओं में उन्हीं क्रियाओ का उपयोग करते हुए बड़ी संख्याओ से बने हुए कठिन प्रश्नो का हल करना सीखते हैं। यही कारण हैं कि जिस बच्चे का प्रदर्शन प्राथमिक स्तर पर अच्छा होता हैं उसका प्रदशर्न पूरे शिक्षा काल में अच्छा बना रहता हैं आरै यह बात सभी विषयों के संदर्भ में देखने को मिलता हैं। यही स्थिति प्रश्न सूचक शब्दों को समझने और प्रयोग करने में भी पायी जाती हैं। कक्षा 5वी तक बच्चे क्या, कौन, कहॉ, कब, कितना, जैसे प्रश्न सूचक शब्दो से बनें प्रश्न को सरलता से समझकर उत्तर देते हे किन्तु कैसे आरै क्यों जैसे प्रश्नों के उत्तर देने व लिखने में त्रुटि करते है। यद्यपि कैसे और क्यों से बने प्रश्नो के उत्तर देने व लिखने का अभ्यास आरंभिक कक्षाओं में कराते रहते है फिर भी बच्चे इसमे त्रुटि करते है। यद्यपी कैसे और क्यो से बने प्रश्नो से उत्तर देने व लिखने का अभ्यास आरंभिक कक्षाओ से कराते रहते हैं, फिर भी बच्चे इसमें त्रृटि करते हैं। अतः कैसे से संबंधित प्रश्नों की बारंबार पुनरावृत्ति के साथ साथ क्यों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर देने व लिखने का पर्याप्त अभ्यास कराने पर जारे देना होगा। कक्षा 5वी में पर्यावरण विषय के अतर्गत 31 अध्याय है जिसमें केवल 14 क्यो से संबंधित प्रश्न हैं। मेरा व्यक्तिगत विचार यह है कि कक्षा 5 वी में क्यो से संबंधित प्रश्न का पर्याप्त अभ्यास कराना आरंभ कर देना चाहिए क्योंकि इसमें जहॉ बच्चों में अपने आस पास होने वाली कार्य/घटनाओ के संबंध में कारण जानने की जिज्ञासा उत्पन्न होगी हैं जो आगे चलकर उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करेगा वही दूसरी ओर इससे उनमें चिंतन व तर्क करने की क्षमता विकसित होगी, जो आगे की कक्षाओ में उनके लिए सहायक सिध्द होगा। भले ही पाठ्यवस्तु की संरचना के अनुसार अभ्यास कार्य के अंतर्गत क्यों से संबंधित प्रश्न बहुत कम रखे गए हो या नही एक जागरुक शिक्षक को यह तथ्य अपने ध्यान में रखते हुए अपने शिक्षण योजना में पाठ्यवस्तु के अनुरुप क्यो से संबंधित प्रश्न स्वयं तैयार कर बच्चो को अभ्यास करने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराना होगा।

इसे जानना क्यों आवश्यक हैं :–

1. बच्चो का सही मूल्यांकन कर सकें।
2. बच्चो की पाठ्यवस्तु में रुचि उत्पन्न कर सकें।
3. बच्चो के आयु व स्तर अनुरुप प्रश्न कर सकें।

रघुवंश मिश्रा
उच्च वर्ग शिक्षक
वि0खं0–कोटा

–0– समाप्त –0–